चैतन्य लहरी

खण्ड XI 1999 अंक 3 & 4

आत्म-साक्षात्कार प्राप्त होने के बाद भी जो लोग अपनी पुरानी आदतों और प्रवृत्तियों में मग्न रहते हैं, उनकी स्थिति को 'योग-भ्रष्ट' स्थिति कहते हैं।

परम पूज्य माताजी

इस अंक में

क्रम संख्या		पृष्ठ नं.
1.	सम्पादकीय	3
2.	संगीत-संध्या - 16/12/98 दिल्ली	5
3.	श्री रामनवमी पूजा - 5/4/98	15
4.	ईसा मसीह पूजा - 25/12/98 गणपति पुले	16
5.	कृष्ण पूजा - 16/8/98 - कबैला	25
6.	श्री गणेश पूजा - 5/9/98 - कबैला	34
7.	श्री गणेश पूजा - विवाह समारोह के पश्चात् प्रवचन	43

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34,
फोन : 7184340

सम्पादकीय

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का 76वां जन्मदिवस स्वर्णिम सहस्राब्दि का उषा काल है जिसकी भविष्यवाणी दसवीं शताब्दी ई. में येरुशलम के सेंट जॉन ने की थी। जो भी भविष्यवाणियां उन्होंने की वे सभी सहजयोगियों के जीवन में खरी उतरीं। अब हम उन्हें चमत्कार या संयोग मात्र नहीं मान सकते, अपनी चैतन्य लहरियों द्वारा परमपावनी माँ के आशीर्वाद के रूप में इन्हें पहचान सकते हैं, हम सब अपने अपने स्तर पर अपने जीवन में इसका अनुभव कर सकते हैं। इन अनुभवों से हम पूर्णतया चमत्कृत हैं और महसूस कर सकते हैं कि हमारी परमेश्वरी माँ हमें कितना प्रेम करती है और हमारा कितना ध्यान रखती है! केवल व्यक्तिगत रूप से उनका दर्शन प्राप्त करने वाले लोग ही इस बात का अनुभव नहीं करते परन्तु हजारों सहजयोगी, जिन्होंने कभी श्री माताजी को देखा भी नहीं, भी इसे महसूस करते हैं। उदाहरणार्थ पश्चिमी अफ्रीका के बेनिन नामक देश से 18 जनवरी 1999 को हमें निम्नलिखित पत्र प्राप्त हुआ :-

"पश्चिमी अफ्रीका में बेनिन, 12,600 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र का पचास लाख लोगों की जनसंख्या वाला छोटा सा देश है। वर्ष 1995 में हमने बेनिन में सहजयोग का अभ्यास आरम्भ किया। हम लगभग 4000 योगी हैं और हर सप्ताह तीस से अधिक लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं। बेनिन में दो सहजयोग ध्यान केन्द्र हैं। मैं भजन गायक हूँ और भारतीय भजन मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। विचारों तथा भजनों का आदान-प्रदान करने के लिए मैं आपसे तथा भारत के अन्य सहजयोगियों से पत्र-व्यवहार करना चाहता हूँ, अतः कृपा करके उन्हें मेरा पता दें और मेरा फोटो उन्हें दिखाएं। आपका पत्र पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। सहजयोग एवं भजनों के विषय में आप मुझे सभी कुछ बताएं। अब मैं आपको बेनिन के एक स्थान पर श्री गणेश के प्रकट होने की प्रमाणित घटना के विषय में बताना चाहूँगा। हमारे एक सहजयोगी बागवानी करते हैं, "मैं अपने बाग के लिए चौकीदार नहीं रखना चाहता। अपने बाग की रक्षा के लिए मैं श्री गणेश को रक्षक मानता हूँ।" और एक पूजा करके उन्होंने अपना बाग श्री गणेश के संरक्षण में छोड़ दिया।

कुछ सप्ताह पश्चात् उसके बाग में डाकू आए। उन्होंने वहां एक भीमकाय व्यक्ति को खड़े देखा, जिसने मार-मारकर उन डाकुओं को लहूलुहान कर दिया। कुछ दिनों पश्चात् वे डाकू एक बार फिर उसी बाग में गए और तब भी उस व्यक्ति ने उनका वही हाल किया। तत्पश्चात् वे बाग के मालिक के पास गए और पूछा कि उसने अपने बाग में चौकीदार के रूप में किसे नियुक्त किया है? ये न जानते हुए कि वे लुटेरे थे, उसने उत्तर दिया, "किसी को भी नहीं।"

महाजन साहब मेरे साक्ष्य का यही अंत है। अगले पत्र में मैं आपको एक और घटना के विषय में लिखूंगा। आपसे और अन्य भारतीय भाई-बहनों से बहुत से पत्रों की आशा करते हुए मैं समाप्त करता हूँ।"

जय श्री माताजी-मिल फोर्लाण्डो
LANDO MILLEFORT

C/546, MAISON AHOUANSOU
Rue De Ouidah, Cotonou,
Benin, W.Africa.

वर्ष 1980 में स्वर्गीय श्री धुमाल के फार्म में राहुरी में ऐसी ही एक घटना घटित हुई थी। उनके फार्म में भी लुटेरे घुसे थे और उनकी पिटाई जिस व्यक्ति ने की उसे इससे पूर्व किसी ने देखा हीं न था। नि:सन्देह श्री धुमाल जानते थे कि वह व्यक्ति श्री भैरवनाथ थे, उन्होंने इस घटना के विषय में बताया भी था।

हमारा सौभाग्य है कि सदैव परमेश्वरी माँ की सुरक्षा का आशीर्वाद हमें प्राप्त है, इसके विषय में कोई सन्देह नहीं और ये बात हमारी चेतना में अंकित है। परन्तु स्वर्णिम सहस्राब्दि हमें सन्देश देती है कि आत्मा के रूप में अपने पद के विषय में हम पूर्णत: जागरूक हो जाएं। जब चेतना पूरी तरह से स्थापित हो जाएगी तब हम आत्मा के सच्चे माध्यम बन जाएंगे और परमपूज्य श्री माताजी की गौरवमय नई सहस्राब्दि का आनंद लेंगे। उस चेतना में लोभ, ईर्ष्या और भय का कोई स्थान नहीं है। जब तक हम स्वयं से परिचित न हुए थे तब तक चेतना के एक निम्न स्तर पर हमारे भूतकाल में इन सभी बाधाओं का शासन था । चेतना के विस्तार के समरूप हम उस अवस्था तक विस्तृत हो सकते हैं जहाँ हम शुद्ध चेतना मात्र बन जाएं। स्वर्णिम सहस्राब्दि की कुंजी सामूहिक चेतना की ऐसी अवस्था प्राप्त करने में निहित है। तब सभी सामूहिक एवं व्यक्तिगत समस्याओं का स्वत: समाधान हो जाएगा। संक्षिप्त में येरुशलम के जॉन ने यही कहा था :- "प्रकट होने से पूर्व सभी रोग दूर हो जाएंगे और सभी लोग अपना और अन्य लोगों का इलाज करेंगे। मानव समझ लेगा कि सत्य पर डटे रहने के लिए उसे अपनी सहायता करनी होगी; और वाक्य-संयम-दिवस (The Day of Reticence) के पश्चात लोभी व्यक्ति अपना हृदय तथा खज़ाना गरीबों के लिए खोल देगा; वह अपना वर्णन मानव मात्र के परिरक्षक (Curator) के रूप में करेगा और अन्तत: एक नए युग का आरम्भ होगा।

संगीत संध्या

दिल्ली (भारतीयम) 16.12.98

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (हिन्दी)

इतने ठंड में और तकलीफ में आप सब लोग आए। एक माँ के हृदय के लिए ये बहुत बड़ी चीज़ है। अब और कोई दिन मिल नहीं रहा था, इसी दिन आप लोगों को तकलीफ उठानी पड़ी। और आप लोग इतने प्रेम से, सब लोग, यहाँ आए! सबका कहना था कि हवाई अड्डे पर माँ हम तो बिल्कुल आपको देख भी नहीं पाए, और मैं भी आपको नहीं देख पाई। इसलिए बेहतर है कि आप लोग आज यहाँ आए हैं, सब लोग। और दिल्ली वालों का जो उत्साह है, वो कमाल का है। ऐसा ही उत्साह सब जगह हो तो ये भारतवर्ष सहजयोग का महाद्वार बन जाएगा। ये एक समय है, ऐसा कहना चाहिए, जिसे घोर कलयुग कहते हैं। इस घोर कलयुग की एक विशेषता ये है कि मनुष्य बहुत जल्दी भ्रांति में आ जाता है। उसको जरा सा भी विवेक नहीं रह जाता और इस भ्रांति के चक्कर में वो न जाने कहाँ-कहाँ भटकता रहता है। आज कल आप देख रहे हैं कि लोग कैसे-कैसे गलत लोगों के पीछे भाग रहे हैं और गलत-गलत धारणाएं अपना करके अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं। ये समझना चाहिए कि ये घोर कलयुग है।

इस कलयुग की विशेषता ये है कि मनुष्य धर्म का पथ छोड़ करके अधर्म की ओर आसानी से चला जाता है। उसमें उसे कोई हिचक नहीं होती। वो परेशान नहीं होता और वो वैसे कर्म करते ही रहता है। उसमें एक तरह की उद्दामता आ जाती है जिसे अपने अंदर लेकर वो समझता है कि वो बड़ा सत्कर्म कर रहा है। इतना भयंकर दावानल जैसे चारों तरफ से लगा हुआ दिखाई देता है। उसके बीच आप सहजयोगी खड़े हुए हैं। इस कलयुग के बारे में अनेक वर्णन शास्त्रों में है। पर उसमें ये कहा जाता है कि नल, जो दमयंति के पति थे, के हाथ एक दिन कलि लग गया। तो उन्होंने कहा कि अब मैं तेरा सर्वनाश करता हूँ क्योंकि तुमने मेरी पत्नी से मेरा बिछोह किया है। इस पर कलि ने कहा कि तुम मेरा महात्म्य जानो, मेरा जो महात्म्य है उसे समझ लो। उस महात्म्य में गर तुम समझो कि मुझे मार डालना है तो मार डालो, मैं खत्म हो जाऊंगा। उसने कहा तुम्हारा क्या महात्म्य है? तो उन्होंने ये कहा कि इसी कलियुग में जब लोग कलि की भ्रांति के चक्कर में आ जाएंगे, उसी वक्त ये बड़ा कार्य होने वाला है- 'आत्मसाक्षात्कार'

आत्मसाक्षात्कार पाना ही जीवन का लक्ष्य है। भारतवर्ष में तो यही जीवन का लक्ष्य माना गया है कि आप पहले आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त हों, उसके अलावा और जीवन का कोई भी अर्थ नहीं माना जाता। यही एक लक्ष्य है। यही एक परम पाने की चीज़ है और ये आत्मसाक्षात्कार कलयुग में आपने प्राप्त किया है। आपने इसे पाया, ये बहुत बड़ी चीज़ है। इसको पाने के बाद अब आपने उसकी महत्ता भी समझी। उसकी आप गहराई में भी उतरे और उस गहराई में उतर के आप देख रहे हैं कि इसी से आपको शांति की प्राप्ति होगी और आपको आनन्द की प्राप्ति होगी। बहुतों को हो भी गई, बहुतों को

मिल भी गयी है, और भी इसमें सूक्ष्मता आने लगी है। ये सूक्ष्मता समझने की बात है। इस सूक्ष्मता को आप समझेंगे तो आप जान जाएंगे कि आप किधर अग्रसर हो रहे हैं, किधर आप बढ़ रहे हैं, कौन सी आपकी दशा है। अगर अभी भी आप सूक्ष्म नहीं हो रहे हैं तो सोचना चाहिए कि आपमें कुछ कमी है और उस कमी को ठीक करना चाहिए। इस सूक्ष्मता की बात करते वक्त शास्त्रों से ही इसका बड़ा आधार मिलता है। ये देश अपना जो है यह अत्यंत गहन विचारों से भरा हुआ और अत्यंत महान् सत्वों से भरा हुआ है। इसमें जो लिखा गया है; वो अद्वितीय है, उसके जैसी चीज़ दूसरी संसार में लिखी नहीं गई। यहाँ से लेकर के तो और लोग कुछ ज्ञान लेकर चले जाएं, लेकिन इसकी गहराई में आप ही लोग उतर सकते हैं। लेकिन हम जानते ही नहीं कि हमारे देश में कितना महान व पवित्र ऐसा वांङ्मय हो गया। कितनी बढ़िया-बढ़िया चीजें हमारे यहाँ प्राचीन काल में लिखी गईं और उस पर विवरण किया गया, बताया गया कि क्या चीज़ है 'आत्मासाक्षात्कार' और उससे आप क्या-क्या प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि हमने आपको बहुत चीजें खोल-खाल कर बता दीं, समझा दीं लेकिन उसकी अनुभूति हुए बगैर उसको महसूस किए बगैर आप किसी भी तरह से संतुष्ट नहीं हो सकते। उसकी अनुभूति होनी चाहिए। वो अनुभूति क्या है? ये समझने की जरूरत है।

सबसे पहले तो समझना चाहिए कि हम पाँच तत्वों से बने हुए हैं। ये पाँच तत्व हमारे अंदर सारी क्रियाएं करते हैं। सब उसी से हमारी घटना हुई है। उसी से हम एक मनुष्य जीव बने। सारे जानवरों में हर एक में ये होते है पर विशेष रूप से इंसान में इसका प्रादुर्भाव इस तरह से होता है कि कुण्डलिनी जो है, वो सिर्फ मनुष्य में मानव में ही स्थित होती है और मानव में ही वो कार्यान्वित होती है क्योंकि अब आप अपनी चरम स्थिति में आ गए। इसके बाद आपका जो भी कार्य है वो उत्थान का कार्य है और उस उत्थान के कार्य में अब आपको आत्म साक्षात्कार प्राप्त करना है। उसके लिए कुण्डलिनी आप सबके अंदर स्थित है। अब ये मैं बता रही हूँ, लेकिन ये बातें हमारे यहाँ बहुत पुरानी लिखी हुई हैं कि हमारे अंदर कुण्डलिनी की शक्ति है। उसके बाद अनेक लोगों ने इस पर काफी वर्णन किया हुआ है-जैसे बारहवीं शताब्दी में मैंने बताया था कि ज्ञानेश्वर जी ने वर्णन किया और सोलहवीं शताब्दी में इतने लोग हुए गुरु नानक जैसे इतने महान कहना चाहिए कि विद्वान उन्होंने तक कुण्डलिनी पर बहुत कुछ लिखा। कबीर ने लिखा, तुकाराम ने लिखा, नामदेव ने लिखा। सब लोगों ने लिखा है ये शक्ति हमारे अंदर है, इसे जागृत करना चाहिए। ये बात समझने की है कि ये हमारे ही देश के लोगों ने इतना क्यों लिखा? क्योंकि हम जो ये इस देश के देशवासी हैं ये कोई तो विशेष लोग हैं । ये धर्म में पले हुए लोग हैं। इनके अंदर धार्मिकता है। सदियों से धर्म हमारे अंदर बसा हुआ है। और धर्म ऐसा है कि हम समझते हैं ये अधर्म है। ये करना गलत बात है। और देशों में मैं देखती हूँ कि वो धर्म, अधर्म के अंदर कोई भी अंतर नहीं पाते। अगर कोई अधर्म करना हो तो सोचते हैं ये तो बड़ी भारी हमारे लिए एक Challenge है एक आह्वान है, उस आह्वान के लिए ये हम यह कर रहे हैं। अगर उनको Drug लेना है तो कहते हैं कि इसमें डरने की कौन सी बात है, ये तो हमारे लिए आह्वान है। कुछ भी गलत काम करना है उसको हम कहते हैं ये हमारे लिए आह्वान है और गलत काम करना वहाँ समझा जाता है कि बड़ी भारी उच्चतर स्थिति मनुष्य की है जहाँ वो बड़ा भारी, एक कहना चाहिए, कि योद्धा प्रमाणित होता है। अब इस चीज़ को समझना चाहिए कि

हमारी बुद्धि में और उनकी बुद्धि में मूलतः ये फर्क है। मूल में ही हममें फर्क है और मूल में ही हम जानते हैं कि धर्म और अधर्म क्या है? वो कोई माने या न माने। पढ़े हो, लिखे हो या देहात के हो, शहर के हों, सब भारतीय जानते हैं कि धर्म क्या है और अधर्म क्या है। निश्चित रूप से जानते हैं तो भी अधर्म करते हैं, तो भी अधर्म में फँसते हैं, तो भी ये चीज़ें करते हैं और उसपे सोचते हैं कि हाँ हमने किया लेकिन गलत किया तो क्या करें? पर जो बाहर के लोग हैं उसको गलत नहीं समझते, इतनी उन लोगों की धारणाएं ही नहीं बनी हुई। मूलतः उनके अंदर ये विचार ही नहीं आया कि कोई चीज़ पाप और पुण्य है। पाप और पुण्य की जो कल्पना है वो सिर्फ भारतीयों को मिली हुई है और इसलिए आप लोग एक विशेष रूप के नागरिक हैं जिनके लिए ये उपलब्ध है, ये मिला हुआ है। ये ज्ञान मिला हुआ है कि धर्म क्या है। छोटी-छोटी बातों में भी हम लोग बहुत कुछ जानते हैं जो ये लोग नहीं जानते। इनको मालूमात नहीं लेकिन इनकी खोज में गहराई है। हमारी खोज में गहराई कम। हम लोग ये सोचते हैं कि भई हम तो ये करते ही आए हैं। ऐसा-ऐसा तो हमने किया ही है, तो इसमें कौन सी विशेषता है? लेकिन इन लोगों ने क्योंकि अंधेरा देखा है इसलिए प्रकाश का महत्व बहुत जानते हैं। वही बात हमारे अंदर, मैं सोचती हूँ, कुछ कम है और इस वजह से हिन्दुस्तानी सहजयोग में आकर के गहरे उतरना कठिन समझते हैं । गहरे उतर नहीं पाते, आप सबसे मुझे ये कहना है कि सहजयोग में एक बार आपका बीज मानो, जैसे प्रस्फुटित हुआ पर इसे एक विशाल पेड़ बनना है। इस विशाल पेड़ बनने के लिए ध्यान-धारणा आदि करना है और सहजयोग को फैलाना है। आप अगर सहजयोग को फैलाएंगे नहीं तो फिर आपका प्रसार नहीं हो सकता। आप बढ़ नहीं सकते। आप अंदर गहरे उतर नहीं सकते। इसलिए सहजयोग को फैलाना चाहिए । कम से कम हर आदमी चाहे तो एक हजार आदमी को आत्मसाक्षात्कार आसानी से दे सकता है। तो इस मामले में शर्माने की कोई ज़रुरत नहीं है, इस मामले में हिचकने की कोई ज़रुरत नहीं। इस मामले में खुले आम बातचीत करने की ज़रुरत है क्योंकि आप भारतीय हैं। बार-बार मैं कहूँगी कि भारतीयता जो है वो एक विशेष अनुपम हमारे पास वस्तु है और इसीलिए कहा जाता है कि हज़ारों पुण्य करने के बाद आप भारतवर्ष में जन्मे। लेकिन इस धर्म में, जो भी धर्म हम मानते हैं, इसको मैं हिन्दू-मुसलमान या क्रिश्चन नहीं कहूँगी, पर धर्म माने अच्छाई की ओर जो हमारा रुझान है, हम अच्छाई को पसंद करते हैं, ये जो रुझान हमारे अंदर है वो जो रुझान है उसका कारण ये है कि हमारे देश में अनेक-अनेक ऋषि-मुनि हो गए और उन्होंने बहुत-कुछ लिख दिया, बहुत-कुछ बताया कि जीवन में क्या चीज़ करने से पवित्रता रहती है। पवित्रता की ओर हमारे अंदर बहुत चिंतन हुआ है और इस पवित्रता की ओर कोई जबरदस्ती से नहीं संपूर्ण आपको स्वतंत्रता है। इस स्वतंत्रता में ही हम बहक गए । ये जो स्वतंत्रता हमें मिली उसी से हमने रास्ते दूसरे ले लिए। अब पूरी तरह स्वतंत्र हैं और ये स्वतंत्रता का मतलब होता है कि स्व का तंत्र। स्व का तंत्र जानना, स्व माने आत्मा उसका तंत्र जानना ये स्वतंत्रता है। तो हिन्दी भाषा में कहिए आप संस्कृत में हर एक शब्द का अर्थ है। उसके व्याकरण की विशेषता यह है कि उसके जो कुछ भी वर्ण हैं या दूसरे जैसे क, ख, ग, घ वग़ैरा होते हैं, ये सब व्यंजन जिसे कहते हैं, ये सबमें अर्थ है। एक-एक चीज़ में अर्थ है निरर्थक कोई चीज़ नहीं। एक-एक अक्षर आप ले लीजिए तो इसमें बड़ा भारी व्याकरण हुआ है। अब ये सारी बात बताने का शायद अभी समय न हो पर मुझे ये कहना है

कि ये पाँच तत्वों को बताने वाले अपने अंदर पाँच तरह के व्यंजन बने हुए हैं। इसीलिए व्यंजन को वो शक्ति कहते हैं। और जब व्यंजन में शक्ति आ जाती है तो वो ही व्यंजन का अर्थ निकल आता है। अब छोटी-छोटी बातों में हम लोग समझते हैं कि कुछ भी नाम रख दो लड़के का, लड़की का कुछ भी नाम रख दो, नाम में क्या रखा है? तो ये इतनी गलत बात है कि नाम में क्या रखा है? नाम भी, लड़के का नाम जो है, वो भी सोचकर रखना चाहिए; क्योंकि एक-एक अक्षर में उसमें निहित है, छिपा हुआ है, एक बड़ा भारी मर्म। और वो मर्म है उसका 'अर्थ'। अर्थ और शब्द दोनों एक साथ रहते हैं और अर्थ जो है, वो शब्द की सेवा करता है। कोई भी आप शब्द कहिए तो उसके अर्थ में और शब्द में कोई अंतर, ऐसा हम लोग नहीं जानते हैं, पर अर्थ जो है, वो शब्द की सेवा करता है। हर एक चीज़ का अलग-अलग शब्द होता है। हर एक वर्णन में, हर एक चीज में हमारे यहाँ शब्द अलग-अलग होते हैं। ये भाषा की विशेषता ही नहीं है, ये भारतीय संस्कृति की विशेषता है। इसलिए इस संस्कृति से जो लोग उत्पन्न हुए हैं, इस संस्कृति में पढ़े हैं, और पढ़ रहे हैं, उनको जानना चाहिए कि हमारी संस्कृति है क्या? हम अपनी संस्कृति को जानते भी नहीं, कुछ समझ में भी नहीं आता कि सचमुच ऐसा क्यों करते हैं? पता नहीं हमारे बाप-दादे करते थे इसलिए हम करते हैं।

तो सबसे बड़ी चीज है कि अपनी संस्कृति को जानें और पहचानें कि क्या बात है? हम क्यों इस तरह से धार्मिक हैं? अपने आप ही हम लोग धार्मिक हो जाते हैं। उनको कुछ बताने की ज़रुरत नहीं है। कोई उनके ऊपर ज़बरदस्ती नहीं है कि तुम ऐसे ही करो कि वैसे ही करो। पर वो धार्मिक हैं। ये मानव की धार्मिकता कहाँ से आती है? क्यों आती है? उधर हमको ध्यान देना चाहिए कि ये हम लोगों ने अपने यहाँ ऋषि-मुनियों से बात सुनी। अब अंतर एक कि जो लोग, परदेसी जिनको हम कहते हैं, जो दूसरे देश के रहने वाले हैं, उनकी विचारधारा और हम लोगों की विचारधारा बिल्कुल अलग है। सोचने का, विचारने का भी जो तरीका है वो बिल्कुल अलग है। इतना अलग है कि आश्चर्य होता है। ग़र विदेश में आप ग़र कोई बात कहें, परदेस में आप कोई ग़र बात कहें तो उसका पड़ताला लेने लग जाएंगे। उस पर साइंटिस्ट लगा देंगे। उसको देखेंगे ये है या नहीं? लेकिन उससे वो कहां तक पहुँच पाते हैं? अपने देश में तरीका और है, और वो ये है कि ग़र कोई बात कही गई है तो उसका पड़ताला बनाने की ज़रुरत नहीं क्योंकि ये ऋषि मुनि जो बड़े पहुँचे हुए लोग थे, उन्होंने कही है। उसको स्वीकार्य करना चाहिए। जो जो बात उन्होंने बताई वो स्वीकार्य करना चाहिए, क्योंकि इतने पहुँचे हुए लोगों ने वो बात कही है। किसी ने जो भी बात कही उसको मान लेना चाहिए, क्योंकि उनसे ज्यादा अक्लमंद हम नहीं हैं। लेकिन परदेस में सब सोचते हैं, हम सबसे ज्यादा अक्लमंद हैं। वैसे अपने यहाँ नहीं है। अब इसका पड़ताला नहीं लेना चाहिए। पर कहा गया है कि ग़र आपका आत्मसाक्षात्कार हो जाए और आप सम्पूर्ण आत्मसाक्षात्कारी हो जाएं, आपमें पूर्णता आ जाए, तब आप देख सकते हैं, प्रयोग करके कि जो ऋषि-मुनियों ने बात कही थी वो सच है या नहीं। अब सहजयोग में आप लोग यही करते हैं। हमने एक बात कह दी। आप मान जाते हैं कि माँ ने ये बात कही और उसको आप समझ लेते हैं कि माँ की कही हुई ये बात है। इसमें ज़रुर तथ्य है। उसमें आप ये नहीं सोचते कि माँ ने कहा, इसका पड़ताला करो। ये करो, वो करो। फिर आत्मसाक्षात्कार के बाद जब आप सम्पूर्णता में आ जाते हैं, जब आप उस दशा में पहुँच जाते हैं, तब आप खुद

ही इसका पड़ताला कर सकते हैं। जैसे हमने कहा है वो बातें हैं या नहीं। इसलिए अपने यहाँ गुरु का बड़ा भारी स्थान माना जाता है कि गुरु ने जो बात कही, उसको कभी भी शंका नहीं करनी चाहिए। पर आजकल के जैसे गुरु निकल आए वो देखने के बाद, मुझे समझ में नहीं आता है कि गुरु के लिए क्या कहा जाए! पर उसकी भी पहचान है। गुरुओं की पहचान है कि किसको असली गुरु मानना चाहिए और किसको नकली। जो आपको अनुभव दे वो ही असली गुरु। ये नहीं कि पैसा दे और ये डायमंड निकाल के दे। ये गुरु-वुरु नहीं हो सकते। ये तो तमाश-खोर हैं, या कहना चाहिए, ये अपनी दुकानें खोल रखी हैं। गुरु वही है जो आपको अनुभव दे। जब ये अनुभव आपमें प्राप्त होता है तो उसको स्वीकार्य करो। स्वीकार्य करके उसमें बढ़ो। उसमें पूर्णता आप लाओ, और फिर उसका पड़ताला आप देख लो। उसके उलट वहाँ पर, परदेस में, देखा मैंने कि किसी ने ग़र कोई बात कही कि ऐसी है तो पहले उसकी सिद्धता दो; पहले उसको साइंटिस्ट को दो। अब वो साइंटिस्ट पार है या नहीं है, उसमें इतनी क्षमता है या नहीं, वो समझ सकता है या नहीं, इसके लिए वो समर्थ है या नहीं, ये नहीं देखा जाता। किसी ने भी कुछ बात कह दी, उसके पीछे लग गए। फिर उसको दोहरा कर के दूसरा आदमी कहेगा कि नहीं-नहीं ये नहीं इसमें ऐसे है। तीसरा आदमी कहेगा कि नहीं नहीं ये जो है चीज़ इसमें ये गड़बड़ है। ऐसा है, वैसा है, क्योंकि अभी तक आत्म साक्षात्कारी वो लोग नहीं हैं, और उनमें वो सम्पूर्णता नहीं है। तो इस तरह का जब तक आपमें एक पूरी तरह से जीवंत अनुभव न आए। जब तक आप उस अनुभव से पूरी तरह से प्लावित न हों मतलब Nourish न हो, तो आप अधूरे हैं और अधूरे होने पर आपको कैसे समझ में आएगा कि ये सत्य है या झूठ है? ये बुद्धि के जो चक्कर हैं, यही कम करने हैं। जब हमारे शास्त्रों में ये बात कही है। तो वो सत्य ही है। अब नानक साहब ने गुरु ग्रंथ साहब जब बनाया, वो सारे Realize souls पहुँचे हुए लोगों की कविताएं ले करके उससे बनाया। अब उसको पढ़े ही जा रहे हैं, पढ़े ही जा रहे हैं। ये भी बेकार बात है। उसमें क्या लिखा है वो समझने की कोशिश करो। उससे फिर वो आत्मसात होगा, हमारे अंदर बसेगा और हम उसी के सहारे उठ सकेंगे।

तो अब आपसे मैंने दो ही बात बताईं सीधी-सीधी बात कि जो कुछ भी ऋषियों ने और गुरुओं ने बताया उसको प्रमाण मान लेना, क्योंकि आप अभी तक इतने प्रवीण नहीं हैं, आप इतने पहुँचे नहीं हैं। फिर उसके बाद दूसरी बात कि आप प्रवीण होने का प्रयत्न करें। उधर अग्रसर हों और प्रवीण हो जाएं। और प्रवीण होने पर, फिर आप पड़ताला इसका लें कि है कि नहीं। ये तो एक हिन्दुस्तानी के लिए हुआ। लेकिन मैंने ये देखा है कि परदेसी जो आपके भाई हैं ये तो बड़ी जल्दी पार भी होते हैं और ये गहरे उतर जाते हैं। क्योंकि इनके अंदर गहराई आ गई है। हमारे अंदर गहराई नहीं आई। हमारे गुरु ने ये कहा, हो गया काम खत्म। ये फ़लाने कह गए, काम खत्म। श्री राम ऐसे थे, काम खत्म। अरे भई उनके नज़दीक तुम कहीं गए कि नहीं, उनको समझा कि नहीं, उनको अपनाया कि नहीं? उसके अंदर से आपको क्या प्रेरणा मिली? बस भजन गा रहे हैं। चीख रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। ये बड़े-बड़े संत-साधुओं ने, महाराष्ट्र में ख़ास कर और यहाँ भी, ये कहा कि आप भजन गाते रहें। एक उन्होंने वहाँ वार्क़री पंथ निकाला, हर जगह पंथ निकले। बेचारों को ये क्या मालूम था कि इन्सान इतना बेवकूफ है कि उसको कुछ दे दो तो बस वो ही करके बैठे रहेगा। वो तो संत साधु थे। उनको क्या मालूम

कि ये गहरा नहीं उतरेगा, इस पर विचार नहीं करेगा, इस तरफ अग्रसर नहीं होगा? तो बस उसी की एक चीज़ चल पड़ी। अब जिसने जो कुछ लिखा वो ही चीज़ चल पड़ी। अब जैसे महाराष्ट्र में मैंने बताया; वार्करी पंथ है। तो एक महीना वो लोग जाते हैं पैदल, बदन पर फटे कपड़े पहन कर। पता नहीं क्यों? ऐसा तो कहीं लिखा नहीं होगा। वहाँ महीना भर जागते हैं और वहाँ रहते हैं। पूरे समय वो, क्या कहते हैं आप लोग पता नहीं उसको, झाँझ, झाँझ बजाते-बजाते पहुँचते हैं। अब वहाँ पहुँच कर के एक महीना रहते हैं। उसके बाद वो सोचते हैं कि हमने तो भगवान को पा लिया। ऐसे थोड़े ही बताया था। उन्होंने तो ये बताया था कि इधर-उधर चित्त जाने की जगह तुम परमात्मा का ध्यान करो। परमात्मा को याद करो। उनका नाम स्मरण करो। क्योंकि उससे तुम्हारा चित्त इधर-उधर नहीं जाएगा। देखिए उन्होंने जो बात कही थी, उसको वहीं तक सीमित रखा और इसी तरह से हमारे यहाँ के अनेक पंथ निकल चुके हैं। पर उससे किसी को कोई लाभ नहीं हुआ और पुश्तन-पुश्त वोही-वोही चीज़ें चल रही हैं। अब आप सहजयोगी हैं। आपने आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त किया, आप विशेष लोग हैं। ये समझ लीजिए। अब इसमें आपको और गहरा उतरना चाहिए। उस गहरे उतरने से आपके अंदर जो सूक्ष्मता जागृत होगी वो मैं अभी आपको समझाती हूँ। वो अब अंग्रेज़ी में मैं इन लोगों को बताऊंगी।

संगीत संध्या

स्काउट मैदान, दिल्ली 16.12.98

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
(सहजयोगी पर पंचतत्वों की अभिव्यक्ति)

भारतीय सहजयोगियों को मैं बता रही थी कि भारतीय ज्ञान की शैली पाश्चात्य ज्ञान से अत्यन्त भिन्न है। पश्चिम में आप यदि कुछ बताएं तो लोग इसकी परीक्षणात्मक स्वीकृति माँगते हैं। वे वैज्ञानिकों या अन्य ज्ञानशील लोगों के पास जाते हैं और पूछते हैं कि इन पुस्तकों में जो लिखा है वो सत्य है या असत्य। ईसा मसीह को भी वे आँकते हैं, मोज़िज़ को भी वे आँकते हैं। वे सभी को आँकने का प्रयत्न करते हैं मानो वही सर्वाधिक विवेकशील एवं योग्य व्यक्ति हों। इन लोगों के विरुद्ध वे एक के बाद एक पुस्तक लिखते चले जाते हैं मानो उन्हीं लोगों ने अपने मस्तिष्क से कुछ कहा हो! प्राय: इसे कभी स्वीकार नहीं किया जाता और यदि स्वीकार कर लिया जाए तो वे धर्मान्ध हो जाते हैं। परन्तु सूझ-बूझ की भारतीय शैली के अनुसार यदि किसी महान ऋषि मुनि या सन्त ने कुछ कहा है तो आपको उसकी बात सुननी होगी क्योंकि आप उतने बड़े सन्त नहीं हैं। जो भी कुछ उसने कहा है यह उसका अपना अनुभव है, अपना ज्ञान है। आपको उसे आँकने या असत्य कहने का कोई अधिकार नहीं। आप इसे स्वीकार करें और एक बार जब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाएगा, तो ये स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि, आत्मसाक्षात्कार के बाद आपको उन्नत होना होगा। पूर्णत: जब आप उन्नत हो जाएंगे तब आप स्वयं देख सकेंगे कि जो भी कुछ उन्होंने कहा है वह सत्य है, अत: वह सत्य है। अत:

मार्ग भिन्न है. एक मार्ग से यदि आप विज्ञान आदि के माध्यम से समझने का प्रयत्न करते हैं तो आप कहीं भी नहीं पहुँच पाते, इतना ही नहीं, आपकी उन्नति में बाधा पड़ती है। तो जो कुछ भी इन महान ऋषि मुनियों ने कहा है उस पर विश्वास करते हुए उस ज्ञान को समझें। जो भी कुछ ईसा मसीह, हजरत मोहम्मद, ज्ञानदेव ने कहा है आपको उस पर विश्वास करना होगा। अभी तक आपका आध्यात्मिक स्तर उतना उच्च नहीं है। अतः आपको विश्वास करना होगा। इसे 'स्वीकार कर इसकी छानबीन करने का प्रयास न करें।' किसी भी चीज़ की छानबीन करते हुए आप उसमें खो जाते हैं। एक बार जब आप उस स्तर के आत्मसाक्षात्कारी बन जाएंगे तब पूर्णत्व की ऊँचाई तक आप उन्नत होंगे। केवल तभी आप ये समझ पाएंगे कि इन सन्तों की कही बातें सत्य हैं या असत्य और तभी आप छानबीन कर सकेंगे। तब सत्य, असत्य का भेद कर पाना बहुत सुगम हो जाएगा। सहजयोगियों के लिए ये पता लगाना अत्यन्त आसान होता है कि कोई चीज़ वास्तविक है या अवास्तविक, ये सत्य है या असत्य, प्रेम है या घृणा। चैतन्य लहरियों के माध्यम से आप यह भेद जान सकते हैं।

इससे आगे जाने के लिए, व्यक्ति के लिए जानना आवश्यक है कि ये चैतन्य लहरियाँ क्या हैं और किससे बनी हैं? इन चैतन्य लहरियों के पीछे कौन सी सूक्ष्म शक्ति है? इस शक्ति को हम परम-चैतन्य कहते हैं। परन्तु ये परम चैतन्य है क्या? परम चैतन्य प्राप्त करने के बाद आपमें क्या घटित होता है? यह बात, इस सूक्ष्मता को, समझ लेना आवश्यक है।

जैसा मैंने कहा, हम पाँच तत्वों से बने हैं, ठीक है? तो जब आपको जागृति प्राप्त होती है, जब कुण्डलिनी आपके सहस्रार पर पहुँचकर आपके ब्रह्मरन्ध्र का भेदन करती है तो आपकी एकाकारिता परमेश्वरी शक्ति (Divine Power) से हो जाती है। यह परमेश्वरी शक्ति तब आपके माध्यम से बहने लगती है। तार जुड़ जाता है। जब ये शक्ति आपमें से बहने लगती है तो क्या होता है? इसकी सूक्ष्मता हमें समझनी चाहिए। सूक्ष्मता ये है कि जिन **पंच तत्वों** से हम बने हैं उन्हें ये चैतन्य लहरियां शनैः शनैः उनके सूक्ष्म तत्वों में जोड़ने लगती हैं। कहा गया है, बाइबल में भी कहा गया है, कि 'शब्द' ही परमात्मा है। परन्तु ये 'शब्द' है क्या? आप कह सकते हैं कि 'शब्द' मौन आदेश (Silent Commandment) है। हम इस प्रकार कह सकते हैं। परन्तु भारतीय दर्शन के अनुसार शब्द से बिन्दु की उत्पत्ति होती है, या हम कह सकते हैं कि शब्द नाद बन जाता है और फिर बिन्दु और इस बिन्दु से ये पांचों-तत्व एक के बाद एक अभिव्यक्त होने लगते हैं।

प्रथम तत्व जो आता है वह है 'तेज'। प्रकाश अभिव्यक्त होने वाला प्रथम तत्व है। तो प्रकाश पहले तत्व का सार है। यह सब संस्कृत में लिखा हुआ है। परन्तु हमें समझना चाहिए कि सहजयोग में प्रकाश किस प्रकार प्रसारित होता है। आप सर्वत्र प्रकाश देखते हैं। तो प्रथम तत्व प्रकाश का सूक्ष्म तत्व है, ज्ञानोद्दीप्ति (ज्ञान का प्रकाश) हो जाना। परन्तु ज्ञानोद्दीप्ति का अन्य अर्थ भी है, हम इसे 'तेज' कह सकते हैं। उदाहरण के रूप में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने के पश्चात् व्यक्ति का मुखमण्डल तेजोमय हो उठता है। तो हम कह सकते हैं कि प्रकाश का सूक्ष्म तत्व तेजस्विता है, यह तेजस्विता आपके मुखमण्डल पर दिखाई देने लगती है। तेजस्वी मुखमण्डल से लोग बहुत प्रभावित होते हैं और ऐसे आभावान व्यक्ति को विशेष सम्मान देने लगते हैं। आपने मेरे फोटो देखे हैं, बहुत बार आपको उनमें अथाह प्रकाश देखने को मिलता है। यह कुछ और न होकर मेरे अन्दर का प्रकाश है जो सूक्ष्म होकर दैदीप्यमान हो रहा है।

पंच तत्वों में से प्रकाश भी एक है। मुझमें जब प्रकाश सूक्ष्म हो जाता है तो यह तेजदायी हो जाता है तथा आपके अन्दर यह सूक्ष्म विकास घटित होता है। आपके मुखमण्डल भी तेजोमय हो उठते हैं। उन पर तेज होता है और आपकी त्वचा का रंग भी भिन्न हो जाता है। इस तेज को समझा जाना चाहिए। जिस स्थूल प्रकाश से हम बने हैं यह उसका सूक्ष्म तत्व (सार तत्व) है।

तत्पश्चात् प्रकाश तत्व से एक अन्य तत्व का उद्भव होता है, जिसे हम संस्कृत में 'वायु' कहते हैं अर्थात् हवा। इस स्थूल वायु का सूक्ष्म तत्व, आपको प्राप्त होने वाली, शीतल चैतन्य लहरियां हैं। शीतल चैतन्य लहरियां उसी वायु तत्व का सार हैं। हमें बनाने वाले पाँच मूल तत्वों में से वायु तत्व का सार ही शीतल चैतन्य लहरियां कहलाता है। जब आपका आध्यात्मिक विकास होता है तो ये सभी सूक्ष्म तत्व अपनी अभिव्यक्ति करने लगते हैं। आप केवल लहरियां ही नहीं प्राप्त करते, शीतलता का भी अनुभव करते हैं और यही वायु तत्व का सार है।

इसके पश्चात् जल तत्व है। जल भी हमें बनाने वाले तत्वों में से एक है। इसका सूक्ष्म तत्व क्या है? (कभी-कभी अंग्रेज़ी भाषा में अभिव्यक्ति के लिए शब्द नहीं होते) जल तत्व सूक्ष्म रूप में जब अभिव्यक्त होता है तो यह कठोर त्वचा को कोमल करता है। त्वचा कोमल हो जाती है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति का एक अन्य चिन्ह ये है कि उन्हें स्निग्धता लाने के लिए चेहरे पर किसी क्रीम का प्रयोग नहीं करना पड़ता। उनके अन्दर का जल तत्व ही उनके चेहरे की त्वचा को चमक और पोषण प्रदान करता है तथा उसे कोमल बनाता है। चेहरे की ये कोमलता प्रत्यक्ष दिखाई देती है। आत्मसाक्षात्कारी व्यक्तिं के मुख पर ये अभिव्यक्ति अत्यंत आवश्यक है। इसी के साथ-साथ आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति अत्यन्त विनम्र एवं मृदु हो जाता है। किसी से जब वह बातचीत करता है तो उसकी आवाज में प्रेम होता है या यूँ कहें कि जल की शीतलता होती है। तो आपके अन्दर जिस अन्य सूक्ष्मता की अभिव्यक्ति होनी चाहिए-आपके आचरण में, आपकी त्वचा पर, दूसरों के प्रति आपके व्यवहार में-वह यह है कि आपको जल की तरह से होना चाहिए। जल की तरह से गतिशील, शीतलता, शांति एवं स्वच्छता प्रदायक होना चाहिए। आत्मसाक्षात्कारी होने के पश्चात् ये गुण आपके व्यक्तित्व का अंग-प्रत्यंग हो जाते हैं।

जल तत्व के पश्चात् अग्नि तत्व है। आपमें अग्नि भी है परन्तु यह अत्यन्त शांत अग्नि है। यह किसी अन्य को नहीं जलाती, आपके अन्दर की बुराइयों को जलाती है। न केवल आपके अन्दर की बुराइयों को, आपके माध्यम से अन्य लोगों की बुराइयों को भी आपकी ये अग्नि जला देती है। मान लो कोई अत्यन्त क्रोध से मेरी ओर आता है तो मेरे अन्दर की अग्नि से उसका क्रोध शांत हो जाता है। इतना ही नहीं गहन आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति को अग्नि जला नहीं सकती। अग्नि की जलन उस तक नहीं आ सकती यह बात समझ लेना बहुत आवश्यक है। आप यदि कोई गलत कार्य कर रहे हैं तो अग्नि आपको जला सकती है। परन्तु यदि आप अच्छी सहजयोगी हैं पूर्णतः विकसित सहजयोगी हैं तो अग्नि आपको कभी जलाएगी नहीं। हमारे सम्मुख सीताजी का उदाहरण है जो अग्नि में प्रवेश कर गईं फिर भी अग्नि ने उन्हें नहीं जलाया। तो हमें समझना है कि अग्नि तत्व का सार यदि हमें प्राप्त हो जाता है तो अग्नि हमें जला नहीं सकती।

इस प्रकार अग्नि तथा जल, दोनों ही तत्व दिव्य बन जाते हैं। उदाहरणार्थ जिस जल को आप छूते हैं, जो जल आप पीते हैं, जिस जल में आप अपना हाथ डालते हैं, वह चैतन्यित हो

जाता है। इसका क्या अर्थ है? जल की सूक्ष्मता इसमें आ जाती है-शीतल तथा रोगमुक्त करने की शक्ति उस जल में आ जाती है। तो सूक्ष्म होने के पश्चात् सभी शक्तियों की अभिव्यक्ति होने लगती है और इन्हें आप स्वयं देख सकते हैं। इनके लिए आपको प्रयोग (experiment) नहीं करने पड़ते।

अंत में पृथ्वी माँ है। पृथ्वी माँ बहुत महत्वपूर्ण हैं, बहुत महत्वपूर्ण। रुस में (डाचा में) लिया गया एक फोटोग्राफ है जिसमें कुण्डलिनी पृथ्वी माँ से निकल रही है। स्पष्ट दिखाया गया है कि पृथ्वी माँ ही यह सब दर्शाती है। उदाहरण के रूप में आपने फूल देखे हैं, पुष्प यदि आप मेरे कमरे में रखें तो वे खिल उठते हैं, इतने बड़े हो जाते हैं कि लोगों ने कभी इतने बड़े आकार के फूल देखे नहीं होते। मैं उन पर कुछ नहीं करती। मैं तो केवल वहाँ बैठी होती हूँ। फूलों के साथ क्या घटित होता है? धरा माँ का नियम कार्य करता है। माँ ही आपको पोषण प्रदान करती है और आप स्वस्थ हो जाते हैं और इस प्रकार पृथ्वी तत्व की सूक्ष्मता कार्य करती है। पृथ्वी माँ इन सब पेड़ों और पुष्पों को जन्म देती है। यह हमारे अन्दर भी एक बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। पृथ्वी माँ के हमसे गहन सम्बन्ध हैं परन्तु हम पृथ्वी माँ का सम्मान नहीं करते। हमने पृथ्वी को प्रदूषित किया है। इस पर लगे पेड़ों को काट डाला है तथा सभी प्रकार की मूर्खता की है। परन्तु वे हमारी माँ हैं। पृथ्वी माँ की बहुत सी सूक्ष्मताएं हममें आ जाती हैं। इनमें से एक गुरुत्वाकर्षण है। गुरुत्वाकर्षण की अभिव्यक्ति से व्यक्ति अत्यन्त आकर्षक हो जाता है-शारीरिक रूप से नहीं आध्यात्मिक रूप से। ऐसा व्यक्ति अन्य लोगों को आकर्षित करता है। लोग सोचते हैं कि उसमें कुछ विशेष है। यह पृथ्वी माँ का एक गुण है। पृथ्वी माँ में यदि गुरुत्वाकर्षण न होता तो हम पृथ्वी की गति की तेजी से ही दूर जा गिरते। पृथ्वी माँ के अन्य गुणों की अभिव्यक्ति भी हममें होने लगती है। पृथ्वी माँ की तरह से हम भी अत्यन्त सहनशील एवं धैर्यवान बनने लगते हैं। आप यदि सहनशील नहीं हैं, उग्र स्वभाव हैं तो पृथ्वी तत्व की सूक्ष्मता की अभिव्यक्ति आपमें नहीं हुई है। पृथ्वी माँ की ओर देखें, किस प्रकार वे हमारी मूर्खताओं को सहन करती हैं! कितनी ज्यादतियाँ हम उन पर करते हैं परन्तु वे सभी कुछ सहन करती हैं।

श्री गणेश जी का ये गुण है कि वे आरम्भ में सहन करते हैं, एक सीमा तक वे सहन करते हैं। इसी प्रकार हम भी अत्यन्त सहनशील, धैर्यवान और क्षमाशील बन जाते हैं। सभी सहजयोगी जिनमें चैतन्य लहरियाँ हैं उनमें कम से कम ये गुण तो आ ही जाना चाहिए। आपकी चैतन्य लहरियों में जिन चीज़ों की अभिव्यक्ति होती है वे सभी मैंने आपको बताई हैं। ये समझ लेना आवश्यक है कि अब आप बहुत महान हो गए हैं। अन्य लोगों के साथ ऐसा नहीं हुआ। जो सहजयोगी नहीं हैं उनके साथ ये घटना नहीं घटी। जो लोग चर्च, मस्जिद या मन्दिर जाते हैं आप उन्हें देखें। उनके चेहरे देखें। उनकी ओर देखें वे कैसे दिखाई देते हैं? मन्दिर से उन्हें कुछ नहीं मिला, मस्जिद से उन्हें कुछ नहीं मिला, किसी भी पूजा के स्थान से उन्हें कुछ नहीं मिला। अतः ये सब बनावटी हैं क्योंकि सत्य (वास्तविकता) से उनका नाता ही नहीं जुड़ा। केवल आत्मसाक्षात्कार के बाद ही आपका सम्बन्ध वास्तविकता से होता है और आपके माध्यम से कार्य करने वाली सूक्ष्मताओं की समझ आपको आ सकती है।

मैं ये सब आपको क्यों बता रही हूँ? क्योंकि मैं चाहती हूँ कि आप अपने को समझें, अपने को पहचानें; समझें कि आप क्या हैं और आपको क्या प्राप्त हुआ है। एक बार जब आप स्वयं को समझ लेंगे, स्वयं को पहचान लेंगे तो

आप बहुत कुछ कर सकते हैं। सर्वप्रथम आप ये कहें कि मैं एक सहजयोगी हूँ। पूर्ण आत्मविश्वास के साथ ये कहें और आत्मविश्वस्त व्यक्ति की तरह देखें कि सहजयोगी के रूप में मैंने क्या किया है? सहजयोगी के रूप में मैं क्या कर सकता हूँ? कुछ सहजयोगियों ने अद्भुत कार्य किए हैं। उन्होंने सहजयोग का बहुत सा कार्य किया है। परन्तु कुछ अन्य सहजयोगी अब भी मुझे लिखते हैं कि,"मेरे पति मुझसे झगड़ते हैं, मेरा बेटा ऐसा है, मेरी माँ ऐसी है।" मुझे पत्र के बाद पत्र आते रहते हैं। आप एक सहजयोगी हैं। आपको चाहिए कि अपनी सूक्ष्मताओं को देखें और इन्हें कार्यान्वित करें। लोग सोचते हैं कि मैं यहाँ उनकी, उनके परिवार की, उनकी नौकरियों की समस्याओं का समाधान करने के लिए हूँ। इस कार्य के लिए मैं यहाँ नहीं हूँ। मैं यहाँ आपको आत्मसाक्षात्कार देने तथा आपको प्राप्त हुई उपलब्धियों का ज्ञान देने के लिए हूँ। इसे आप चुनौती के रूप में स्वीकार करें। चुनौती की तरह आप इसे लें तो आप हैरान होंगे कि किस प्रकार आपकी सहायता होती है और किस प्रकार आपको परिणाम प्राप्त होते हैं।

सहज का अर्थ केवल यही नहीं है कि आपको स्वत: आत्मसाक्षात्माकार मिल जाए। इसका अर्थ ये भी है कि आपको सहजता प्राप्त हो जाए। पूर्ण प्रकृति सहजता प्राप्त करती है। ये सभी सूक्ष्म गुण जो मैंने आपको बताएं हैं ये भी सहजता प्राप्त करके कार्यान्वित होते हैं। नि:सन्देह गण और देवदूत आपकी सहायता कर रहे हैं परन्तु अभी आपको उनकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। मुख्य चीज़ तो ये है कि आप महसूस करें कि आप क्या हैं, आप को क्या प्राप्त हुआ है और आपने इसका कितना सामना किया है तथा इसने किस प्रकार कार्य किया है। मैंने देखा है कि जब भी मुझे कोई छोटी-मोटी समस्या होती है तो यह (परम चैतन्य) तुरन्त कार्य करता है। ऐसे स्थान पर और ऐसे लोगों में ये कार्य करता है जिसकी मैंने कभी आशा भी न की थी! सभी कुछ कार्यान्वित हो जाता है। परन्तु ये सब आपके हित के लिए होता है, आपके विकास के लिए होता है और आपको ये समझाने के लिए होता है कि आप सहजयोगी हैं। आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर गए हैं। परन्तु यह चीज़ आपको विकसित करनी होगी।

अर्न्तदर्शन आपको बताएगा कि आप इन सभी सूक्ष्म गुणों को कार्यान्वित कर रहे हैं कि नहीं। अन्तर्दर्शन यदि आप करने लगेंगे तो यह देखकर आप हैरान हो जाएंगे कि आपमें शक्तियाँ हैं और आप चमत्कारिक रूप से कार्य कर सकते हैं।

मैं आप सबको आशीर्वाद देती हूँ। कृपया ये सभी सूक्ष्म गुण अपने अन्दर विकसित करें। पहले से ही ये आपमें विद्यमान हैं, आपको कुछ नहीं करना; केवल इन्हें समझें और स्थापित करें।

आप सबका हार्दिक धन्यवाद।

✠ ✠ ✠

श्री रामनवमी पूजा

(5 अप्रैल 1998 को रामनवमी के दिन श्रीमाताजी के नोएडा निवास पर हुई संक्षिप्त पूजा के अवसर पर परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा दिए गए प्रवचन का सारांश।)

महाराष्ट्र के मुकाबले में शालीवाहन शक के चैत्र माह में नवरात्रि (प्रतिपदा से नवमी) उत्तरी भारत में शानो-शौकत से मनाई जाती है। महाराष्ट्र में श्री कृष्ण का जन्म विट्ठल अर्थात महाराज के रूप में गोकुल अष्टमी पर धार्मिक उत्साह से मनाया जाता है। श्री विट्ठल भगवान विष्णु के आठवें अवतरण थे। रात्रि को बारह बजे उनका जन्म हुआ। भगवान विष्णु के सातवें अवतरण श्री राम का जन्म चैत्र माह की नवमी को दोपहर बारह बजे हुआ। यही दिन रामनवमी कहलाता है।

मध्य प्रदेश के छिन्दवाड़ा नामक स्थान पर श्री राम की तरह माताजी श्री निर्मला देवी का जन्म भी 21 मार्च 1923 को दोपहर बारह बजे हुआ। छिन्दवाड़ा, पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण दिशाओं में, जहाँ दो रेखाएं मिलती हैं, स्थित है। यह जन्म तिथि चन्द्र मास पर आधरित पंचांग के अनुसार है। परन्तु सूर्यमास पर आधारित पंचांग के अनुसार श्री राम का जन्म प्रथम माह के प्रथम दिन होना चाहिए था, अर्थात् शालीवाहन शक अट्ठारह सौ पैंतालिस (1845) के चैत्र माह के पहले दिन। महाराष्ट्र में चैत्र के पहले दिन को गुडी पडवा कहते हैं। यह दिन श्री माताजी का जन्म दिवस भी होता है और शालीवाहन सम्राट का ताजपोशी दिवस भी। शालीवाहन शक 1920 का आरम्भ मार्च 28, 1998 से चैत्र प्रतिपदा के रूप में (प्रथम माह का प्रथम दिन के रूप में) होता है। श्री राम आदर्श पति थे और श्री सीताजी आदर्श पत्नी। और उनके पुत्र लव और कुश आदर्श पुत्र थे। श्री राम ने उच्च आदर्शों की स्थापना करनी चाही जिनका अनुसरण मानव करे। सुक्रान्त ने उन्हें हितैषी राजा (Benevolent King) का नाम दिया।

श्री राम के जीवन में जितनी भी घटनाएं घटीं जैसे अहिल्या का उद्धार, शबरी-मोक्ष, वानर सम्राट बाली-वध और रावण-वध आदि, धर्म का शासन स्थापित करने के लिए थीं। वास्तव में श्री राम धर्मातीत थे-धर्म से ऊपर। वास्तव में उनसे धर्म का जन्म होता था, वे 'धर्म स्थित' थे, धर्म के अवतार थे।

सिंहासन की मर्यादाओं को बनाए रखने के लिए उन्होंने अपनी प्रिय पत्नी श्री सीताजी को केवल इसलिए त्याग दिया क्योंकि अग्नि परीक्षा के पश्चात भी लोग उन पर शक करते थे। अपने पुत्रों का भली-भाँति लालन-पालन करने के पश्चात् एक प्रकार से श्री सीताजी ने भी श्री राम को त्याग दिया। लव और कुश ने सभी विद्याएं प्राप्त कर ली थीं और धनुर्विद्या के तो वे इतने पारंगत हो गए थे कि उन्होंने अपने चाचा, श्री लक्ष्मण, को युद्ध में पराजित कर दिया। अन्ततः अश्वमेद्य यज्ञ के घोड़े मुक्त कराने के लिए श्रीराम को अपने पुत्रों से युद्ध करने के लिए आना पड़ा। परन्तु धर्म-स्थित श्री सीताजी ने हस्तक्षेप करके पिता और पुत्रों में होने वाले युद्ध को टाल दिया।

अपने जीवन काल में श्री राम ने एक प्रकार से ऐसे कार्य किया मानो किसी नाटक में भूमिका कर रहे हों। उन्होंने भुला दिया कि वे परमात्मा के अवतरण हैं। परन्तु श्री कृष्ण रूप में

जब वे अवतरित हुए तो उन्हें अपनी शक्तियों का पूर्ण स्मरण था और उनका उपयोग उन्होंने राक्षसों को दण्ड देने के लिए अत्यन्त कूटनीति पूर्वक किया।

श्री राम महान देवी भक्त थे। वे शक्ति के पुजारी थे। लंका पर आक्रमण करने से पूर्व उन्होंने देवी पूजा की। जिसमें देवी को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ आदि करवाने के लिए उन्हें किसी ब्राह्मण की आवश्यकता थी। इस कार्य के लिए उन्होंने श्री लंका के राजा रावण को न्यौता दिया, क्योंकि रावण ब्राह्मण था और देवी भक्त भी। बिना आना कानी किए रावण आया और नौ प्रकार (नव-विध) से देवी पूजा करने में श्री राम की सहायता की।

श्री राम यदि चालबाज होते तो वे रावण का वध वहीं कर देते। परन्तु वे मर्यादा पुरुषोत्तम थे, धर्मपरायण व्यक्ति थे। उन्होंने यह अधम और ग़ैर-जिम्मेदारी पूर्ण कार्य नहीं किया। वे शत्रु थे परन्तु पूजा करते हुए शत्रुता को पूर्णतया भुला दिया गया।

श्री राम के महान आज्ञाकारी सेवक श्री हनुमान भी आदर्श शिष्य थे। उनका अनुसरण सभी सहजयोगियों को करना चाहिए। उनमें महान शक्तियाँ थी। उच्चकोटि के पावन व्यक्ति श्री हनुमान सदा श्री राम का कार्य करने के लिए उद्यत रहते थे। द्वापर युग में जब श्री विष्णु श्री कृष्ण रूप में अवतरित हुए तो श्री हनुमान उनके रथ की चोटी पर विराजित होते थे। वे 'चिरंजीव' कहलाते हैं, एक अमर व्यक्ति, अमरत्व प्राप्त सात देवों में से एक। वे भी आकर सौंपे गए कार्यों को करके मेरी सहायता करते हैं। सभी पूजाओं में वे विद्यमान होते हैं। बम्बई की एक पूजा में लिए फोटो में वे चैतन्य लहरियों के रूप में प्रकट हुए।

सहजयोग में उत्थान प्राप्त करने के लिए, सहजयोगियों को चाहिए कि अपने जीवन में इन महान विभूतियों के चरित्र का अनुसरण करें। मेरी कामना है कि आप सभी ऐसे महान चरित्र का अनुसरण करके मानव आचरण के उच्च आदर्श को प्राप्त करने में सफल हों। परस्पर और अन्य लोगों पर आप अपने प्रेम और करुणा की वर्षा करें तथा आदर्श सहजयोगी भाई-बहन बनें।

परमात्मा आपको अनन्त आशीष प्रदान करें।

□ □ □

ईसा मसीह पूजा (25.12.98)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (अंग्रेजी में)
(निर्विचारिता का आशीष)

पहले मैं अंग्रेजी में बोलूंगी फिर हिन्दी में। बहुत समय पूर्व आज के दिन ईसा मसीह का जन्म हुआ था। उनके जन्म, तथा जो कष्ट उन्होंने सहे, की कथा आप सब लोग जानते हैं।

उन्होंने ही हमें सहजयोग का नमूना प्रदान किया। किसी भी प्रकार से वो स्वयं के लिए जीवित नहीं रहे। आज्ञा चक्र को खोलने के लिए कार्य करते हुए वे अन्य लोगों के लिए जिए। यद्यपि वे दिव्य अवतरण थे, अत्यन्त शक्तिशाली थे, परन्तु ये क्रूर संसार आध्यात्मिकता को नहीं समझता। मानव आध्यात्मिकता की महानता को नहीं समझता । इतना ही नहीं बहुत से तरीकों से आध्यात्मिकता पर आक्रमण होता है। मनुष्यों ने सदैव ऐसा किया है सभी सन्तों को बहुत कष्ट

उठाने पड़े; परन्तु, मैं सोचती हूँ, ईसा मसीह ने सर्वाधिक कष्ट झेले।

जैसा कि आप जानते हैं वे श्री गणेश के पुनर्अवतरण थे और उनमें श्री गणेश की सभी शक्तियां विद्यमान थी। **इनमें से सर्वप्रथम थी अबोधिता।** वे अनन्त बालक थे। इस धूर्त संसार की क्रूरता और पाखण्ड को वे न समझ पाए। व्यक्ति यदि यह सब समझ भी ले तो क्या कर सकता है? अगम्य साहस के साथ उन्होंने एक ऐसे देश में जन्म लिया जहाँ लोगों को आध्यात्मिकता का बिल्कुल ज्ञान न था।

उनके विषय में मैंने एक पुस्तक पढ़ी थी। जिसमें कहा है कि वे कश्मीर आए और वहाँ मेरे पूर्वजों में से एक शालीवाहन से उनकी भेंट हुई। बड़ी दिलचस्प बात है कि ये सब संस्कृत में लिखा हुआ है और संभवत: लेखक को संस्कृत का ज्ञान न था। ये सब कुछ संस्कृत भाषा में लिखा हुआ है और मैं सोचती हूँ कि संस्कृत पश्चिमी लोगों के लिए सुगम नहीं है। परमात्मा का धन्यवाद है कि वे अंग्रेज़ी न जानते थे नहीं तो बहुत कठिनाई हो जाती। उसमें लिखा है कि शालीवाहन ने ईसा मसीह से पूछा,"आप भारत क्यों आए हैं?" तो उसने कहा,"ये मेरा देश है इसलिए मैं यहाँ पर आया हूँ। यहाँ पर लोग आध्यात्मिकता का सम्मान करते हैं, परन्तु मैं उन लोगों में रहता हूँ जिन्हें आध्यात्मिकता का बिल्कुल ज्ञान नहीं है।" उनकी बातचीत बहुत ही दिलचस्प है क्योंकि शालीवाहन ने उनसे कहा कि आप अपने देश वापिस जाकर वहाँ के लोगों को निर्मल-तत्व सिखाएं। वे वापिस लौट गए और साढ़े तीन वर्ष पश्चात् ही उन्हें सूली (क्रूस) पर चढ़ा दिया गया।

व्यक्तिगत रूप से मैं सोचती हूँ कि भारतीय और पश्चिमी सूली में बहुत बड़ा अन्तर है। पश्चिम में हत्या करना महान व्यवसाय समझा जाता है। ज़रा-सा बहाना मिलते ही वे लोगों का वध कर देंगे। सन्तों की वहाँ हत्या की गई या उन्हें पागल कहा गया। आध्यात्मिकता अस्वीकार करने का यह बहुत अच्छा उपाय है। इसके विपरीत भारत में यदि कोई सन्त कुछ बताए तो उसे चुनौती नहीं दी जाती, कभी नहीं। सन्त होने के नाते लोग उसका विश्वास करते हैं। सन्त हमसे कहीं ऊँचा व्यक्ति होता है। यद्यपि बहुत से निष्ठुर लोग भी थे जिन्होंने सन्तों को सताया, परन्तु जनता ने सामूहिक रूप से सन्तों का सम्मान किया। कुगुरु प्राय: इस देश में नहीं रह सकते क्योंकि वो जानते हैं कि उनकी पोल खुल जाएगी। धन-लोलुप होने के कारण भी वे अमेरिका या अन्य विदेशों में जाकर धनार्जन के लिए टिक जाते हैं। ये भी एक प्रकार का विज्ञान है।

एक सर्वसाधारण परिवार में ईसा मसीह के जन्म लेने का यह भी एक कारण हो सकता है। बचपन में भी उनके पास सोने के लिए कायदे का बिस्तर न था। पूरा वर्णन किया हुआ है कि ईसा मसीह कहाँ सोते थे और गायों के तबेले में किस प्रकार उनकी माँ रहती थी। ये सब यह दर्शाने के लिए था कि आध्यात्मिकता को सुख-साधनों तथा दिखावे की आवश्यकता नहीं है। यह अन्तर्शक्ति है; अन्तर-ज्योति है जो स्वत: प्रकट हो जाती है। इसे दर्शाने के लिए व्यक्ति को कुछ नहीं करना पड़ता। ऐसे व्यक्ति को धन और सम्पदा का ज्ञान नहीं होता।

ईसा मसीह दीन-दुखियों के लिए, रोगियों के लिए चिन्तित थे। उन्होंने कोढ़ियों को ठीक करने का प्रयास किया। बहुत से शारीरिक रूप से रोगी व्यक्तियों की सहायता करने का उन्होंने प्रयास किया क्योंकि उस समय न तो अस्पताल होते थे न चिकित्सक। अत: शारीरिक रूप से दु:खी लोगों की ओर उनका चित्त आकर्षित हुआ। उन्होंने मानसिक रूप से भी उन लोगों को तैयार करने का प्रयत्न किया। पर्वत पर दिए गए उनके बहुत से सुन्दर उपदेश हैं। उस समय के

लोग बहुत अधिक भौतिकतावादी न थे। उन्होंने ईसा मसीह की बात सुनी। परन्तु ये नहीं कहा जा सकता कि कितने लोगों ने उनकी बात को समझा।

यह समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किए बिना आध्यात्मिकता को समझ पाना कठिन है। आध्यात्मिकता के विषय में बात करने वाले और उसे सुनने वाले दोनों का आत्मसाक्षात्कारी होना ज़रुरी है। उनके सुन्दर जीवन के बारे में जितना मैंने समझा है उसके अनुसार जब तक हम आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं तब तक ईसा मसीह की आत्मा को कष्ट पहुँचाते रहेंगे। ऐसा हो रहा है। ईसा मसीह ने स्पष्ट कहा है कि **'आप मुझे, ईसा-ईसा कहकर आवाज़ें देते रहोगे, परन्तु मैं तुम्हें पहचानूंगा नहीं।'** उन्होंने यह अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा है। मेरी समझ में नहीं आता कि इन लोगों ने ईसा के इस कथन को बाइबल से क्यों नहीं निकाला! **इस कथन का अर्थ है कि ईसा मसीह के नाम पर आध्यात्मिक होने का ढोंग करने के लिए जो लोग उपदेश देंगे या विशेष वस्त्र धारण करेंगे ईसा मसीह उन्हें नहीं पहचानेंगे।** यह बात इतनी स्पष्ट है और आज जबकि अन्तिम-निर्णय का समय है। वे पूरे विश्व को आध्यात्मिकता अर्थात् चैतन्य लहरियों के आधार पर आँकेंगे।

उनका निर्णय आरम्भ हो चुका है। मैंने यह देख लिया है। आप भी देख सकते हैं कि बहुत से देशों में चीज़ें लुप्त हो रही हैं। उनके अहं, आक्रामकता और क्रूरता आदि को चुनौती दी जा रही है। युद्ध में जिन लोगों ने अत्याचार किए थे उन्हें दण्ड मिल रहे हैं। इतिहास में भी जिन लोगों ने किसी जाति या समुदाय पर अत्याचार किए हैं उन्हें दण्ड मिलेगा। आक्रामक होकर लोगों को कष्ट देना उनका कार्य नहीं है। यही श्री गणेश-तत्व है जो सहजयोग के माध्यम से कार्य कर रहा है। ईसा मसीह ने यह बात नहीं कही थी। परन्तु उन्होंने यह अवश्य कहा था कि अन्तिम निर्णय होगा।

एक ओर तो ईसा मसीह अत्यन्त दयालु एवं सहृदय थे। परन्तु दूसरी ओर वे वास्तव में श्री गणेश थे। **मन्दिर में वस्तुएं बेचने वाले लोगों को उन्होंने कोड़े से पीटा। धर्म के नाम पर आप व्यापार नहीं कर सकते। यह बात समझ लेना कितनी बड़ी बात है।** परन्तु इसाईयों ने यह बात नहीं समझी। मैं नहीं जानती कि उनकी समझ में क्या आया! महात्मा गाँधी ने आध्यात्मिकता के अतिरिक्त कोई बात नहीं की। हर समय आध्यात्म। परन्तु उनके उत्तराधिकारियों ने आध्यात्मिकता समेत उन्हें एक ओर डाल दिया और नए विचार, नई जीवन शैली तथा नए संसार का आरम्भ किया। उनके अनुयायी कहलाने वाले लोगों को अब बहुत से शराबखाने तथा सभी प्रकार की उल्टी-सीधी चीज़ें चाहिए। क्या आप इस बात की कल्पना कर सकते हैं? महात्मा गाँधी ने कांग्रेस की स्थापना की और कांग्रेस के लोग ही अब ये सब अधम कार्य कर रहे हैं। वे देश को कहाँ ले जाएंगे? आध्यात्मिकता ही इस देश का सौन्दर्य एवं सम्पदा है। आध्यात्मिकता अपनाने की अपेक्षा वे कहाँ जा रहे हैं।?

आध्यात्मिक लोग यद्यपि इसाई नहीं हैं फिर भी ईसा का सम्मान करते हैं, बाइबल का सम्मान करते हैं। मैं आपको बता दूं ये वास्तविकता है जिसे लोग नहीं जानते। जब हम कहते हैं कि वे इसाई नहीं हैं तो इसका अर्थ ये होता है कि उन्हें किसी पादरी ने दीक्षा नहीं दी। फिर भी वे ईसा का सम्मान करते हैं क्योंकि वो जानते हैं कि ईसा मसीह कितने आध्यात्मिक थे। वे आध्यात्मिकता का अवतरण थे। भारत की ये खूबी है कि सन्त हिन्दु हो या मुसलमान, उसका सम्मान होता है। भारत में बहुत से मुसलमान

सूफी सन्त हुए हैं। सभी लोग उनका सम्मान करते हैं। ईसा मसीह के विषय में भी किसी को एतराज़ नहीं है। इसके विपरीत कल आप लोगों ने देखा कि सभी सहजयोगी कितने प्रसन्न थे। क्योंकि वे आत्मसाक्षात्कारी लोग हैं। परन्तु यदि आत्मसाक्षात्कारी न भी हों तो भी इस देश में ईसा मसीह का बहुत सम्मान होता है। पश्चिम के लोग इस बात को नहीं समझ सकते। किस प्रकार वे ईसामसीह के जीवन के विषय में छानबीन कर सकते हैं? वे उन्हें किस प्रकार आँक सकते हैं और उनके विषय में भद्दी फिल्में बनाने का उन्हें क्या अधिकार है? भारत के लोग ये बर्दाश्त नहीं कर सकते क्योंकि उनके मन में आध्यात्मिकता के प्रति बहुत सम्मान है। बाहर के देशों के लोगों से कहीं अधिक। ईसा मसीह के नाम पे लोगों ने बहुत से कुकृत्य किए हैं। बहुत नरसंहार हुआ है और सभी प्रकार की गलत चीजों को स्वीकार किया गया है। इस प्रकार की सूझ-बूझ वाले लोग किस प्रकार ईसा मसीह का आंकलन कर सकते हैं?

उदाहरण के रूप में, जो मैंने इंग्लैंड में देखा उससे मुझे बहुत सदमा पहुँचा, वहाँ किसी की मृत्यु होती है तो वे शराब पीते हैं और यदि किसी का जन्म होता है तो वे शराब पीते हैं। मद्यपान के माध्यम से ही उनके सम्बन्ध हैं। किस प्रकार आप शराब पी सकते हैं? मैंने उनसे पूछा। कहने लगे, "क्यों? ईसा मसीह ने शराब बनाई थी।" मैंने कहा कब? एक विवाह के अवसर पर। मैंने कहा, "विवाह के अवसर पर?" वह शराब नहीं थी, वह तो अंगूरों का रस था, उन अंगूरों का जिन्हें वे उगाते हैं। हमारी भाषा में हम इसे द्राक्ष कहते हैं। वह शराब कैसे हो सकती है। शराब बनाने के लिए तो पहले इसे सड़ाना पड़ता है, इसका खमीर उठाना पड़ता है। विवाह के अवसर पर वे ये कार्य कैसे कर सकते थे? तो शराब पीना वहाँ पर बहुत बड़ा धर्म है।

भारत में यद्यपि किसी ने भी शराब विरोधी कोई बात नहीं की फिर भी हम जानते हैं कि शराब पीना पाप है। आप ये बात प्रतिदिन देखते हैं। सब जानते हैं कि शराब पीने वाले व्यक्ति की बुद्धि मलिन हो जाती है। धार्मिक मंच पर इसके बारे में कहने के लिए कुछ नहीं है, फिर भी सब जानते हैं कि शराब पीने का परिणाम क्या होता है! ऐसा नहीं है कि विदेशों में लोग इस बात को नहीं जानते, वे भी भली-भांति जानते हैं। परन्तु वहाँ पर मद्यपान फैशन बन गया है। अब तो हमारे देश में भी यह छाने लगा है। मेरी समझ में नहीं आता कि स्वतंत्र होने के पश्चात् लोग शराब क्यों पीने लगे! हर अवसर पर लोग शराब पीते हैं, यहाँ तक कि ईसा मसीह के जन्म दिवस पर भी वे शराब पीते हैं! उनके सुन्दर, पवित्र जीवन का यह बहुत बड़ा अपमान है। वे लोग (विदेशी) जब इस पावन भूमि पर आए, तो उनकी पावनता की सभी शक्तियाँ नष्ट हो गईं। भारतीय कम से कम पावनता का सम्मान तो करते हैं। सभी पावन स्थानों का वे सम्मान करते हैं। ये उनकी खूबी है कि वे पवित्रता को समझते हैं। यद्यपि अब वे भी अमेरिका की तरह से अत्यन्त आधुनिक बन रहे हैं, परन्तु अब भी वे जानते हैं कि गलत क्या है और क्या नहीं किया जाना चाहिए।

ये कहते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि अब सहज योग से विदेशी सहजयोगी भी अत्यन्त सुन्दर हो गए हैं। मैं आश्चर्यचकित हूँ क्योंकि उनके संस्कारों में आध्यात्मिकता नहीं है। मैं समझ नहीं पाती कि किस प्रकार उन्होंने यह सब मूर्खता त्याग दी है और आध्यात्मिकता की सुन्दर सुगन्ध से परिपूर्ण सुन्दर कमलों सम खिल उठे हैं! यह चमत्कार है। सभी लोग कहते हैं श्री माताजी हमें विश्वास नहीं होता कि ऐसा

किस प्रकार घटित हो सकता है। आप यह कार्य किस प्रकार कर पाए? मैं कहूँगी यह ईसा मसीह का आशीर्वाद है। उन्होंने देखा कि ईसा मसीह के नाम पर कितनी तुच्छता से लोग कार्य कर रहे हैं और उनमें एक प्रकार की चेतना आ गई कि ये लोग ईसा मसीह और उनके पावन जीवन का चित्रण नहीं कर रहे हैं, यह तो कुछ और ही है। और यही कारण है कि पश्चिम में उत्कट इच्छा है और महान उत्थान शक्ति है।

कल कोई व्यक्ति मेरे पास आया और कहने लगा श्री माताजी यहाँ सामूहिक ध्यान नहीं होता। सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई। **सहजयोग में ध्यान-धारणा ही महत्वपूर्णतम है। इसके विषय में कोई सन्देह नहीं।** विदेशी लोग भारतीय सहजयोगियों से कहीं अधिक ध्यान-धारणा करते हैं। विदेशी पुरुष और स्त्रियों, विशेष तौर पर रुस के लोगों, को आध्यात्मिकता का बहुत ज्ञान है। मैं हैरान थी कि अमेरिका में उन्होंने (रुसी लोगों ने) मुझे बताया कि श्री माताजी ये अमेरिका के लोग सहजयोगी नहीं हैं। मैंने पूछा, "क्यों?" उनके हृदय में आपके लिए सम्मान नहीं है। ये ध्यान-धारणा नहीं करते। **जो ध्यान-धारणा नहीं करते वो सहजयोगी नहीं हैं।** मैंने कहा, "मैं सहमत हूँ।" उन्होंने अमेरिका के सभी सहजयोगियों को ध्यान-धारणा कने के लिए विवश कर दिया। मैं नहीं जानती कि पूर्ववर्त्ती देशों (Eastern Block) के लोग विशेष कर बल्गेरिया, रुस और रोमानिया किस प्रकार सहजयोग को इतना अधिक अपना पाए? नि:संदेह वे साम्यवाद से अभिशप्त थे, और उन्हें लगा कि जीवन में उन्होंने कुछ खो दिया है। इसलिए वे अपने अन्तस की गहराइयों में गए और यह उपलब्धि प्राप्त की। मुझे भारतीय लोगों को भी बताना है कि उन्हें भी ध्यान-धारणा करनी होगी।

भारतीय लोगों में एक दो बहुत बड़े दोष हैं। उनमें से एक है गुट बनाना। उदाहरण के रूप में ब्राह्मण एक जगह पर बैठेंगे, कायस्थ दूसरी जगह पर बैठेंगे, बनिए अलग बैठेंगे। यदि ऐसा न हुआ तो किसी अन्य प्रकार से वे अलग गुट बना लेंगे। मेरे देश का यह अभिशाप है। एक बार जब लोग गुट बनाने लगते हैं तो वे दूसरों की अच्छाइयाँ नहीं देख पाते और न ही कभी अपनी बुराइयाँ देख पाते हैं। गुट बनाने की ये प्रकृति इस देश के लिए बहुत सी समस्याएं खड़ी कर सकती हैं।

ईसा मसीह के समय में बहुत ही भिन्न प्रकार के लोग हुआ करते थे। वे या तो आध्यात्मिकता में रुचि रखते थे या नहीं रखते थे। अब हमारे यहां ऐसे लोग हैं जिनकी रुचि आध्यात्मिकता में है परन्तु अब भी उनकी एक टाँग ऐसे तालाब में फँसी है जहां सदियों पुरानी समस्याएं (बन्धन) बनी हुई हैं। यही हमारे देश के पतन का कारण है। हम एक जुट नहीं हो सकते, एक दूसरे के मित्र नहीं बन सकते। नि:संदेह सहजयोग में इस समस्या का भली-भांति समाधान हुआ है। परन्तु, यदि आप देखें, ईसा मसीह के समय में भी उन्हें अपने शिष्यों से बहुत परेशानी थी। विशेष कर पीटर से और उसमें तो शैतान जाग उठा! ईसा मसीह ने कहा कि उन्होंने बहुत से लोगों में से शैतानी-भूतों को निकालकर सूअरों में डाल दिया। ये सत्य है । शैतानी शक्ति पूरी ताकत से कार्य कर रही है। आध्यात्मिकता की जितनी अधिक सुरक्षा व्यवस्था हम करेंगे वे भी उतने ही अधिक विकसित होंगे।

ये शैतानी शक्ति पूर्व और पश्चिम के देशों में भिन्न रुपों में कार्यरत है। परन्तु मैं उन्हें सावधान रहने की चेतावनी देती हूँ। पश्चिम में इस शैतानी शक्ति को किस प्रकार खोजा जाए? आप आत्मसाक्षात्कारी हैं और हो सकता है कि यह आपको प्रभावित न कर पाए। परन्तु आप ही को इससे लड़ना होगा। आपको ही इससे युद्ध

करना होगा, उदाहरणार्थ प्रजातिवाद से।

प्रजातिवाद अब भी बहुत शक्तिशाली है, अत्यन्त शक्तिशाली। भिन्न जातियों के लोगों से विवाह करके आपको जातिवाद से लड़ना होगा। परन्तु अब भी किसी श्यामवर्ण व्यक्ति का विवाह, किसी गौर वर्ण से कर पाना मेरे लिए बहुत कठिन कार्य है। यह असम्भव स्थिति है। ऐसा करने का प्रयास यदि मैं करूं तो मेरी समझ में नहीं आता कि क्या हो जाएगा। एक बार हमने ऐसा विवाह किया-एक फ्रांस की गौर वर्ण महिला का विवाह एक काले व्यक्ति से कर दिया। श्वेत महिला के अपने पति पर हावी होने के स्थान पर उसका काला पति ही उस पर रौब जमाने लगा। मैं बहुत हैरान हुई कि ऐसा किस प्रकार हो सकता है! मेरे विचार से वह बदला ले रहा था। सम्भवतः ऐसा करने से उसे सुकून मिल रहा था। तो सर्वप्रथम लोगों में अथाह प्रेम और स्नेह विकसित होना आवश्यक है। रंग तो केवल चमड़ी तक सीमित है, अन्तर्प्रेम से इसका कोई संबंध नहीं। इसकी गहनता केवल त्वचा तक है। परमात्मा का धन्यवाद है कि हमारे देश में पत्नी बहुत श्याम रंग की हो सकती है और पति बहुत ही श्वेत रंग का या इससे दूसरी तरह भी हो सकता है, परन्तु रंग के नज़रिए से वे एक-दूसरे को नहीं देखते। परन्तु यहाँ पर एक अन्य प्रकार की समस्या है। अपने अहं से पुरुष स्त्री को पीड़ित करता है। ईसा मसीह ने आपके अहं से लड़ने का प्रयत्न किया। वे अत्यन्त गरीब परिवार में जन्में, उनकी त्वचा भी श्वेत न थी। आपकी भाषा में वे गेहुएं रंग के थे, परन्तु भारतीय भाषा में वे काले थे। जब आध्यात्मिकता की बात आती है तो आप केवल व्यक्ति के आंतरिक प्रकाश को ही देखते हैं, त्वचा के रंग को नहीं देखते। त्वचा तो ऊपर की चीज है परन्तु **पश्चिमात्य** जीवन की यह बहुत बड़ी शत्रु है। इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए। भौतिकवाद एक अन्य शत्रु है **परन्तु ईसा मसीह का सबसे बड़ा शत्रु चरित्रहीनता है।** पश्चिम में चरित्रहीनता को बहुत अधिक मान्यता दे दी गई है। इन देशों में सभी प्रकार का चरित्रहीन व्यवहार है। कहते हैं कि ये सभी दुश्चरित्र लोग किसी एक दुश्चरित्र व्यक्ति के पक्ष में मतदान करते हैं और वह अमेरिका का राष्ट्रपति बन जाता है। ठीक है, वहाँ पर सभी प्रकार की चरित्रहीनता की आज्ञा है परन्तु यह ईसामसीह के बिल्कुल विपरीत है, पूर्णतः विरोध में। लोग नहीं जानते कि चरित्रहीनता उन्हें एक ऐसे साम्राज्य में धकेल देगी जो पशुओं के साम्राज्य से भी बदतर है। वे इतने चरित्रहीन हैं कि वे फ्रायड जैसे व्यक्ति की बातों को सुनते हैं मानो उनमें अपना मस्तिष्क बिल्कुल न हो। ऐसे व्यक्ति की बात को समझने के लिए उनमें आत्मा नहीं है। सहजयोग में आने के पश्चात् ही आप ईसा मसीह के जीवन का आदर्श पा सकते हैं। जो बीत गया वह समाप्त हो गया। अब आप आत्मसाक्षात्कारी हैं और सद्चरित्र आपकी शक्ति है। भूतकाल की बातों को भुला दें और मुझे विश्वास है कि यदि आप चरित्रवान जीवन व्यतीत करें तो बहुत से और लोग भी सहजयोग के झण्डे के नीचे आ जाएंगे।

क्रोध हमारा एक अन्य घोर शत्रु है। लोगों को इसका बहुत गर्व होता है। वे कहेंगे मुझे क्रोध आ जाएगा; मैं बहुत गुस्से में हूँ। उन्हें ये कहते हुए लज्जा नहीं आती मानो यह कोई उच्च कार्य हो। वे ये भी कहते हैं कि मैं घृणा करता हूँ। किसी भारतीय भाषा में यदि ऐसा कह दिया जाए तो इसका अर्थ होगा कि मैं अपराध कर रहा हूँ। यह सारी आक्रामकता क्रोध की ही देन है। किसी को यदि क्रोध करना हो तो स्वयं पर करे। क्रोध से मुक्ति पा लेना ही सर्वश्रेष्ठ होगा। अपने बाल उखाड़ लें, अपने को दाँतों से काट लें, सिरहाने से स्वयं को पीट लें, क्रोध

निकालने का यह बहुत अच्छा तरीका है। देखें तो सही कि आप किस कारण क्रोधित हैं। कभी-कभी तो क्रोध व्यर्थ होता है, इसका कोई अर्थ नहीं ही होता और कभी ये अत्यन्त पागलपन और मूर्खता होती है। परन्तु जब तक आप ये कहना छोड़ नहीं देंगे कि, "मैं बहुत क्रोध में हूँ" तब तक क्रोध आपका पीछा न छोड़ेगा। क्रोध जब आता है तब आपको समझ लेना चाहिए कि आप पतन की ओर जा रहे हैं।

जिन सूक्ष्म बातों के विषय में आपको बता रही हूँ, उनके विषय में ईसा ने नहीं बताया था। यह कार्य मेरे लिए छोड़ दिया गया था। आत्मसाक्षात्कार के बिना किस प्रकार इन सूक्ष्म चीज़ों की बात की जा सकती है। हो ही नहीं सकता।

पिछली बार मैंने आपको चैतन्य लहरियों के बारे में बताया था। ये क्या हैं, किसकी ओर संकेत करती हैं तेज, जल, पृथ्वी, वायु और अग्नि तत्वों से 'तन्मात्रा' नामक सूक्ष्म शक्ति हम किस प्रकार प्राप्त करते हैं? परन्तु एक तत्व के विषय में मैंने आपको नहीं बताया था, एक विशेष तत्व के विषय में, जिसे अंग्रेज़ी भाषा में (Ether) आकाश कहते हैं। यह तन्मात्रा आकाश तत्व द्वारा संचालित की जाती है। ईसा मसीह ने, आज्ञा चक्र को खोलने के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। उनके बलिदान स्वरूप हम आकाश की स्थिति तक पहुँच पाए। इसके बिना यह सम्भव न होता। आमतौर पर हम विचारों का आदान प्रदान कर सकते हैं, परस्पर बातचीत कर सकते हैं, अपने विचार बता सकते हैं, अपने हाथों तथा अंगुलियों से स्वयं को अभिव्यक्त कर सकते हैं। परन्तु चैतन्य लहरियां फैलाने के लिए व्यक्ति के पास चैतन्य लहरियों का होना आवश्यक है। इसके बिना व्यक्ति दूसरों को महसूस नहीं कर सकता। आप यदि आज्ञा चक्र पर हैं, तो इसका अर्थ ये है कि आप मस्तिष्क के स्तर पर हैं, बुद्धिगत हैं। तब आपकी चैतन्य लहरियां भी क्षीण होती हैं। अर्थात् आप ये नहीं समझ पाते कि चैतन्य लहरियां क्या कह रही हैं। आप अपनी चैतन्य लहरियों को नहीं समझ पाते क्योंकि ये अभी तक बुद्धि स्तर पर हैं। लोग कहते हैं, "श्रीमाताजी, हमने चैतन्य लहरियों से पूछा था।" मैं कहती हूँ, "वास्तव में?" आपमें तो चैतन्य लहरियां हैं ही नहीं,; किस प्रकार आप चैतन्य लहरियों से पूछ सकते हैं? यह आम बात है, लोग कहते हैं कि हमने चैतन्य लहरियों से पूछा था। चैतन्य लहरियों ने हमें बताया। यह असम्भव है क्योंकि अभी तो आप मस्तिष्क के स्तर पर हैं।

ईसा मसीह ने आपको मस्तिष्क के स्तर से बाहर उठाया है। यह कठिनतम कार्य है। मैं हैरान हूँ कि इसाई मत को मानने वाले लोगों को मानसिक-बाधा सबसे अधिक है। वे दिल्ली की धुंध की तरह से मस्तिष्क में फँसे हुए हैं। हम पागलों की तरह से पढ़ते हैं, पागलों की तरह से हम लोगों को सुनते हैं और बुद्धि को बढ़ावा देने वाले लोग हमें अच्छे लगते हैं। लोग इतने बुद्धिगत हैं इतना वाद-विवाद करते हैं, चीज़ें उनके मस्तिष्क में इस प्रकार जाती हैं कि आपको कहना पड़ता है, "ठीक है, नमस्कार।" उनके मानसिक दृष्टिकोण से आप लड़ नहीं सकते। यही कारण है कि ये बुद्धिवादी लोग ईसामसीह की पूजा करते हैं और उनकी यह मानसिकता उन्हें अन्य लोगों से श्रेष्ठ होने का भाव प्रदान करती है। जो भी कुछ उनसे कहो वो कहते हैं, "इसमें क्या गलती है, इसमें क्या गलती है?" वे स्वयं को सुधार नहीं सकते क्योंकि मस्तिष्क से ऊपर उठे बिना आप स्वयं को देख नहीं सकते। अन्तर्दर्शन नहीं कर सकते।

स्वयं को देखने के स्थान पर आप अन्य लोगों को देखते हैं। ये सहजयोगी ऐसे हैं, सहजयोग ऐसा है, आदि आदि। परन्तु आप स्वयं को नहीं

देख सकते क्योंकि सभी कुछ बुद्धिगत है। भगवान ईसा मसीह की सहायता लेकर यह बौद्धिक दृष्टिकोण नियंत्रित किया जाना चाहिए; परन्तु ईसा मसीह भी बुद्धिगत हैं, आपके मस्तिष्क में हैं। वे भी बुद्धिगत हैं। तो अब क्या करें? मस्तिष्क की सीमाओं को तोड़ने वाला ही बुद्धिगत है। पत्थर की मूर्ति सम आपने उन्हें बुद्धिगत बना दिया है। **तो सर्वप्रथम हमें स्वयं से कहना होगा, "अब सोचना बन्द करो, सोचना बन्द करो, सोचना बन्द करो, सोचना बन्द करो, चार बार। तब आप ऊपर उठ पाएंगे, यह अत्यन्त आवश्यक है।**

ध्यान-धारणा में आपको मस्तिष्क से परे जाना पड़ेगा। वहां ईसा मसीह इस सारी मूर्खता को समाप्त करने के लिए विराजित हैं। मैं सोचती हूँ कि अच्छा होगा कि लोग पढ़ना भी छोड़ दें। मेरा प्रवचन भी बुद्धिगत हो जाता है। क्या किया जाए? कहने से मेरा अभिप्राय है जो भी चीज़ उनके सिर में जाती है, वह बुद्धिगत हो जाती है। तब वे मुझसे प्रश्न पूछते हैं, "श्री माताजी, क्या आपने ऐसा कहा था?" मैं उत्तर देती हूँ कि मैंने तुम्हें निर्विचार करने के लिए, झटका देने के लिए ऐसा कहा था। मेरे कहने का ये अभिप्राय नहीं था कि आप बैठकर इसकी समीक्षा करें। नहीं। मेरा कहने का अभिप्राय तुम्हें झटका देकर शांत करना था। **अतः निर्विचार हो जाना ही आप सब लोगों के लिए सर्वोत्तम है। निर्विचारिता ईसा मसीह का वरदान है। उन्होंने आपके लिए ये कार्य किया और मुझे विश्वास है, यदि आप इसे कार्यान्वित करना चाहते हैं तो अन्य लोगों की ओर चित्त न दे। प्रतिक्रिया न करें, प्रतिक्रिया बिल्कुल न करें, किसी भी चीज़ को देखकर लोग प्रतिक्रिया करते हैं, क्या आवश्यकता है? क्या लाभ है? प्रतिक्रिया करके आप क्या करने वाले हैं? प्रतिक्रिया आपके मस्तिष्क में विचारों की तरंगें दौड़ा देती हैं।** यह बात मैं आपको सैंकड़ों बार बता चुकी हूँ। इस पूजा के पश्चात् अब आपको पूर्णतः निर्विचार होना होगा। ऐसा यदि हो जाए तो, मैं सोचती हूँ, हमने बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर ली है।

ईसा मसीह ने आपको यह बहुत बड़ा आशीर्वाद दिया है। आपको चाहिए कि इसका आनन्द उठाएं। तभी आपके अन्दर आकाश-तत्व कार्य करेगा। यह आपके चित्त के माध्यम से कार्य करता है। आप जानते हैं कि यह मुझमें भी कार्य करता है। अपने चित्त से मैं बहुत से कार्य करती हूँ। कैसे? मेरा चित्त निर्विचार हो गया है, पूर्णतः निर्विचार। जहाँ भी यह जाता है, कार्य सम्पन्न करता है, परन्तु यदि विचार करने के लिए आप चित्त का उपयोग करेंगे तो यह अपेक्षित कार्य नहीं कर पाता। **व्यक्ति यदि निर्विचारिता में है तो चित्त चमत्कारिक रूप से कार्य करता है, अन्यथा नहीं। अतः चित्त को स्वयं से उठकर, दूसरों पर और फिर मानवता के उच्च स्तर तक जाना होता है, जहाँ आपका सम्पर्क आकाश तत्व से हो जाता है, जिसे हम 'तन्मात्रा' या आकाश तत्व का सार कहते हैं।** आकाश तत्व से हम दूरदर्शन बना सकते हैं, दूरभाष बना सकते हैं अन्यथा यह चमत्कार है। तन्मात्रा से यहाँ बैठे हुए आप कार्य कर सकते हैं। यह कार्य करती है। केवल चित्त कार्य करता है। मैं ये बात जानती हूँ और आप भी यह भली-भांति जानते हैं। चित्त डालने के लिए आपको मुझसे नहीं कहना पड़ता। आप स्वयं चित्त डालिए और कार्य हो जाएगा।

यह अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि आपने पा ली है। मैं सोचती हूँ, एक बार जब आप इसे पा लेंगे तो कोई समस्या न रह जाएगी। पृथ्वी तत्व से हमारी अभिव्यक्ति होने लगती है फिर अग्नि, जल तत्व से अभिव्यक्ति होती है।

तत्पश्चात् हम तेजस तक आते हैं और हमारे मुख मण्डल दीप्तीमान हो उठते हैं। अंत में हमें निर्विचार चेतना (समाधि) प्राप्त हो जाती है। जिसके माध्यम से हमारा चित्त किसी भी प्रकार के विशेष कार्य को करने के लिए स्वतंत्र हो जाता है। परन्तु हर समय यदि हम विचारों में फंसे रहते हैं, तो यह बेचारा चित्त बहुत व्यस्त हो जाता है। यदि आप निर्विचार हैं तो आपको मुझसे नहीं कहना पड़ता कि, "श्री माताजी कृपा करके अपना चित्त डालिए; आप स्वयं चित्त डाल सकते हैं और इस कार्य को कर सकते हैं। चित्त की इस स्थिति में आप महसूस नहीं करते कि आपको क्या प्राप्त हो गया है, आप कहाँ खड़े हैं, कौन से वस्त्र आपने पहने हैं तथा अन्य लोग क्या कर रहे हैं। नहीं, कुछ नहीं। अब आप स्वयं (आत्मा) के साथ हैं और ये जीवन विनोद से परिपूर्ण है। इतना अधिक विनोद, इतना अधिक आनन्द, इतनी अधिक प्रसन्नता इसमें है कि आप किसी भी ऐसी चीज़ की चिन्ता नहीं करते, जिसकी चिन्ता आप लोग करते हैं।

सहजयोग अब बहुत से देशों में कार्यान्वित है। मुझे आप पर गर्व है, बहुत गर्व है। अब सहजयोग अफ्रीका के देशों में भी फैल रहा है। मेरे लिए यह महान सन्तोष की बात है आप सब लोग इस कार्य को कर सकते हैं। आप इसे कार्यान्वित कर सकते हैं। केवल निर्विचार समाधि में चले जाना होगा। ईसा मसीह के आशीर्वाद के रूप में यदि यह कार्य हो जाएगा तो आप इसका पूर्ण आनन्द उठाएंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें।

⌘ ⌘ ⌘

कृष्ण पूजा (कबैला 16.8.98)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम श्रीकृष्ण पूजा करेंगे। श्रीकृष्ण की शक्तियों की एक महत्वपूर्ण बात ये है कि यह आपको साक्षी अवस्था प्रदान करती है। यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि कलयुग में मूल्यों के पतन के कारण पूर्ण भ्रम की स्थिति, सभी प्रकार की खलबली, मानव जीवन को बहुत ही जटिल बना रही है। निर्विचार समाधि प्राप्त करके, ध्यान-धारणा द्वारा ही साक्षी अवस्था प्राप्त करना सम्भव है। ये दोनों स्थितियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

साक्षी अवस्था में व्यक्ति प्रतिक्रिया नहीं करता। प्रतिक्रिया करते ही समस्या आरम्भ हो जाती है। ये समझना अत्यन्त सुगम है कि अहँ या बन्धनों के कारण ही हम प्रतिक्रिया करते हैं। प्रतिक्रिया करने का इसके अतिरिक्त कोई कारण नहीं। उदाहरण के रूप में यह कालीन बहुत सुन्दर है। इसको देखते ही, यदि मैं अपने अहँ का उपयोग करूंगी तो सोचने लगूंगी कि इन्होंने ये कालीन कहाँ से मंगवाया? इस पर कितना खर्च किया? यह पहली प्रतिक्रिया है। इसके आगे भी आप सकते हैं। इसमें क्रोध भी घुस सकता है। ये लोग इतना अच्छा कालीन क्यों लाए? इसे यहाँ बिछाने की क्या आवश्यकता थी? एक के बाद एक बात आएगी। अपने बन्धनों में ग्रस्त होकर मैं यदि इन चीजों को देखूं तो मैं कहूँगी कि कालीन का ये रंग कृष्ण पूजा के लिए उपयुक्त नहीं है। कृष्ण पूजा के लिए उन्हें कोई अन्य रंग लाना चाहिए था। तो एक प्रतिक्रिया से दूसरी प्रतिक्रिया की ओर हम बढ़ते चले जाते हैं। परन्तु इसका अर्थ ये है कि यह बन्धन हमारे अन्तर्रचित है। बन्धनों के कारण आई हुई समस्याएं वास्तव में भयावह है। उदाहरणार्थ प्रजातीयता या प्रजातिवाद (Racialism)। अमेरिका में प्रजातिवाद बहुत है। यद्यपि अमरीकन लोग ऐसा नहीं कहते फिर भी आप इसे महसूस कर सकते हैं। इटली से यदि आप अमरीका जाएं तो आप ये बात महसूस करते हैं। भारत से भी यदि आप वहां जाएं तो इसे महसूस कर सकते हैं। यह प्रजातिवाद क्यों है? इसका कारण क्या है? दूसरी जाति या रंग, जो कि सतही है, के प्रति इस प्रकार की भयानक घृणा से हम प्रतिक्रिया क्यों करते हैं? तर्क बुद्धि से संभवतः आप इसकी व्याख्या कर सकें। हे परमात्मा! ये लोग बिल्कुल बेकार हैं या केवल कष्ट देने के लिए ये हमारे देश में आए हैं। ये सभी बन्धन विद्यमान हैं। आप यदि उन्हें आप्रवासियों के बारे में बातचीत करते सुनें! अमरीकन लोग, सब के सब आप्रवासी हैं। अमरीका कभी भी उनका देश न था, उन्होंने सभी श्याम भारतीयों (Red Indians) को वहाँ से निकाल दिया, उनकी सारी भूमि छीन ली और शान से अमरीका के स्वामी बन बैठे। परन्तु प्रतिक्रिया केवल उन लोगों के लिए है जो श्वेत नहीं है; उनका तिरस्कार होना चाहिए और उन्हें यातनाएं दी जानी चाहिए। अब यदि वे हिंसक स्वभाव के हैं तो हिंसा उनका बन्धन है। वे एक-दूसरे की हत्या करने लगते हैं। क्रूरता पूर्वक उन्होंने बहुत लोगों का वध किया है। वे ये सोचते हैं कि किसी भी देश में घुसकर, वहाँ के लोगों को मारकर, उनकी भूमि पर कब्जा कर लेना उनका अधिकार है। वास्तव में पृथ्वी किसी की नहीं होती। परन्तु किसी को ये भी अधिकार नहीं है कि जाकर भूमि पर कब्जा कर ले और वहाँ के लोगों को बाहर निकाल दे। कल भारत का स्वतंत्रता दिवस था। मुझे भारतीय ध्वज को ऊपर जाते हुए और बर्तानवी ध्वज को नीचे आते हुए देखने का

अवसर प्राप्त हुआ। लोगों को इसके लिए बहुत बड़ा संघर्ष करना पड़ा, बहुत कष्ट झेलने पड़े। अंग्रेज लोग बड़ी शान से भारत आए थे, और यहाँ के मालिक बन बैठे। तो ये भी एक सामूहिक बंधन है कि लोग किसी देश में जाते है, वहाँ के लोगों को निकाल कर वहां के स्वामी बन बैठते हैं। ये तो ऐसा हुआ मानो किसी के घर में जाकर, आप घर के अन्दर से लोगों को निकाल बाहर करें और बड़ी शान से वहां के स्वामी बन बैठें-क्योंकि आपमें उन लोगों से बेहतर बुद्धि है, या सम्भवत: आप उनसे अधिक चालाक हैं। इस दम्भी स्वभाव से यदि श्वेत लोग ये सोचें कि वे श्याम लोगों पर शासन कर सकते हैं तो इस स्थिति में उनमें साक्षी अवस्था नहीं आ सकती। (क्या आप इस बच्चे को बाहर ले जाएंगे? ये क्यों रो रहा है। हो सकता है प्यासा हो, ठीक है)

इस प्रकार का बन्धन प्लेग की तरह है और एक देश से दूसरे देश में फैलता है। लोग सोचते हैं कि वे अन्य लोगों से श्रेष्ठ हैं और इसीलिए वे उन्हें तुच्छ बना देते हैं ओर वे लोग भी ऐसे हालात को स्वीकार कर लेते हैं। यद्यपि वे किसी भी प्रकार से उनसे तुच्छ नहीं हैं। अमरीका का ही उदाहरण लें, क्योंकि इस पूजा के मेज़बान अमरीका के लोग हैं और श्रीकृष्ण अमरीका के शासक हैं। श्रीकृष्ण स्वयं श्याम वर्ण के थे। जिस देश के शासक श्रीकृष्ण हों, वहाँ पर लोग ये नहीं महसूस करते कि सभी अश्वेत लोग या एशिया मूल के लोग यदि वहाँ से चले जाएं तो वहाँ पर क्या हाल होगा? वहाँ के सभी खेलों में अश्वेत लोग आगे हैं। अमरीका में 99% खिलाड़ी अश्वेत हैं। फिर आप यदि संगीत को देखें तो अश्वेत लोगों की आवाज श्वेत लोगों से कहीं अच्छी है। वे इतना अच्छा गाते हैं कि गोरें उनका मुकाबला नहीं कर सकते। वहाँ से यदि सभी एशिया मूल के चिकित्सक, नर्सें, वास्तुविद्, लेखाकार चले जाएं तो वहाँ क्या शेष रह जाएगा?

आपको समझना है कि त्वचा के रंग का आपकी बुद्धि, आपके मूल्यों और आपकी आत्मा से कुछ लेना देना नहीं है। हम यहाँ आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त करने के लिए आए हैं। आत्मा रंग भेद नहीं जानती क्योंकि रंग तो सतही है और रंग के लिए किसी का तिरस्कार करना अत्याचार है। प्रतिक्रिया के रूप में अब दूसरी ओर से भी वही हो रहा है। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। अब काले लोग भी प्रतिक्रिया कर रहे हैं और उनकी प्रतिक्रिया बहुत भयानक हो सकती है। प्रतिदिन मैं पढ़ती हूँ कि उनकी प्रतिक्रिया उग्र रूप धारण करती चली जा रही है, केवल अमरीका में ही नहीं सर्वत्र। वे अब सोच रहे हैं कि इसके विरूद्ध खड़े होकर, इस प्रभुत्ववादी प्रवृत्ति का मुकाबला करना चाहिए। परन्तु उनके अपने देशों में, जहाँ भिन्न रंगों के लोग हैं (वे सभी अश्वेत हैं परन्तु उनमें भी थोड़ी सी भिन्नता है) वे जुट बनाकर एक-दूसरे का गला काटने लगते हैं। दूरदर्शन पर मैंने देखा है कि कितनी क्रूरता से वे हत्या करते हैं। मैं नहीं जानती कि रंग-भेद क्या है? परन्तु उन्होंने जुट बना लिए हैं और परस्पर एक-दूसरे को मारने में लगे हैं। वे कौरव और पांडवों की तरह से दो तरह के लोग नहीं हैं जो स्वभाव से परस्पर विरोधी हों। वे सभी बुरे लोग है- चाहें श्वेत हो या अश्वेत- एक-दूसरे से झगड़ने लगते हैं। ये हिंसा अब बहुत बढ़ती जा रही है। मेरे विचार से हिंसा के शस्त्र से ही वे अपनी अभिव्यक्ति करने लगते हैं। यहाँ पर यदि कोई घटना होती है तो इसके प्रत्युत्तर में किसी अन्य स्थान पर बम फोड़ कर वे बहुत से निरीह लोगों की हत्या कर देते हैं। ऐसा करना जघन्य पाप है। तनिक सी हिंसा भी पाप है और श्री कृष्ण के दृष्टिकोण से इसके लिए कठोर दण्ड मिलना चाहिए। यह प्रवृत्ति अहँ के कारण आती है। क्योंकि आप एक कबीले से सम्बन्धित हैं, इसलिए, आप

सोचते हैं, दूसरे कबीले के लोगों की हत्या करने का आपको अधिकार है। मानव मस्तिष्क में इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण विचार उठते हैं और वे दूसरे लोगों की हत्या करना अपना अधिकार मान लेते हैं। कहा जा सकता है कि यह घृणा की देन है। परन्तु घृणा अहँ की देन है। अहँ जब गतिशील होता है तो घृणा अधिकारात्मकता, क्रोध और हिंसा के दुर्गुणों को एकत्र कर लेता है। ये सारे दुर्गुण अहँ से जन्म लेते हैं। अहं व्यक्ति को अन्धा कर देता है। हिंसा, घृणा, खून-खराबा अनावश्यक है। इस तथ्य के प्रति आप अपनी आँखें बंद कर लेते हैं। अब आप पूछ सकते हैं कि श्री माताजी व्यक्ति में इस अहँ का विकास किस प्रकार होता है। अधिकतर प्रतिक्रियाएँ और बन्धन ही इसका कारण हैं। बच्चों को यदि बचपन से ये बताया जाएगा कि इन लोगों से घृणा करनी है ये गलत लोग हैं, बुरे हैं, तो बच्चे वैसा ही करने लगेंगे। बड़े होकर वे बच्चे नागफनी की तरह से घृणा को दर्शाने लगते हैं और दूसरे लोगों की हत्या में लग जाते हैं।

मानव के इस प्रकार के आचरण का कोई औचित्य नहीं है। यदि वे मानव हैं, तो उनमें मानवीय गुण भी होने चाहिएं। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब वे प्रतिक्रिया किए बिना केवल साक्षी बन जाएं। उदाहरण के रूप में दो मुर्गे लड़ते हैं और लोग आनन्द लेते हैं। एक मुर्गा मर जाता है तो वे लोग प्रसन्न होते हैं मानो मरने वाला मुर्गा उनके माता-पिता का हत्यारा था! अत्यन्त आश्चर्य की बात है! अब स्पेन को ही लें, वहाँ पर साँडों से लड़ाई (Bull fighting) की जाती है। हर साल छः बार ये लड़ाई दिखाई जाती है और यहाँ उपस्थित लोगों से दस गुने लोग उस हॉल में होते हैं। अब तो महिलाएं भी साँडों से लड़ने लगी हैं! यदि लड़ाई में साँड मारा नहीं जाता तो वे उसे गलियों में लोगों को मारने के लिए छोड़ देते हैं। इस प्रकार की हिंसक खुशी प्राप्त करने की भावना अब भी लोगों के मन में है। मानवता, शांति, आनन्द की बात करने वाले मनुष्यों को इस प्रकार के हिंसक कार्यों का आनन्द लेते देखकर बहुत खेद होता है। वे या तो हिंसक कार्य करे हैं या इन्हें देखते हैं। भयंकर हिंसा पर बनी फिल्मों का लोग आनन्द लेते हैं। इनका आप आनन्द लेंगे तो बार-बार ऐसी फिल्में बनती ही रहेंगी।

आप ही साक्षी अवस्था में होंगे, साक्षी बन जाएंगे तो क्या होगा? चित्त से अगर आप इन सब घटनाओं को देखेंगे तो ये कम हो जाएंगी। आप यदि साक्षी अवस्था में हैं, वह स्तर बनाए हुए हैं, तो आपकी कोई दुर्घटना न होगी। यदि कोई दुर्घटना हो भी जाएगी तो आप लोगों को बचा सकेंगे। यह तो अति निम्न स्तर पर है परन्तु बहुत बड़े स्तर पर भी आप यह कार्य कर सकते हैं, बहुत अद्वितीय कार्य। मुझे याद है, उस समय मैं बहुत बड़ी न थी, हम सचिवालय के समीप ही एक घर में रहते थे। हड़ताल हुई और लोग पृथक महाराष्ट्र की माँग करने लगे। पुलिस वहाँ खड़ी थी और मुख्यमंत्री की आज्ञा से उधर आने वाले सभी लोगों पर गोली चला रही थी। उस सड़क पर आने वाले लोगों पर ये गोली चलाते और इस खेल का आनन्द लेते। मैंने ये सब देखा और इसे सहन न कर पाई। मैं नीचे गई और जाकर पुलिस वालों से कहा कि, "गोलीबाज़ी बन्द करो।" आप हैरान होंगे कि उन लोगों ने गोली चलाना बन्द कर दिया। ज़ख्मी लोगों को मैं अपने घर पर लाई, उनके अन्दर से गोलियाँ निकलवाईं, एम्बुलेंस बुलाकर, उनकी जान बचवाई। उस समय मैं साक्षी अवस्था में थी, जहाँ आप निडर हो जाते हैं। **साक्षी अवस्था में रहना यदि आप सीख लें, तो भय नहीं रह जाता। जब आप साक्षी नहीं होते, तभी परेशान होते हैं, तभी उत्तेजित होते हैं। बुरे लोगों की संगति में भी आप पड़ सकते हैं। यदि आप साक्षी अवस्था में हैं, तो**

यह अवस्था अपने आप में ही एक शक्ति है जो अन्य लोगों की कठिनाइयों को दूर करने में भी आपकी सहायक होती है।

किसी सन्त के विषय में चीन की एक कहानी है। एक राजा सन्त के पास मुर्गा लेकर आया और सन्त से कहा कि इसे इस प्रकार से प्रशिक्षण दें ताकि लड़ाई में यह अवश्य जीते। सन्त ने कहा ठीक है। उसने राजा के मुर्गे को एक महीना वहाँ रखा। मुर्गों की लड़ाई जब शुरु हुई तो भिन्न स्थानों से मुर्गे आए और लड़ने लगे। ये मुर्गा केवल खड़ा रहा और देखता रहा। दूसरे मुर्गे उससे डर गये। वे ये न समझ सके कि ये मुर्गा इतना शांत क्यों है? आराम से खड़ा है कुछ करता ही नहीं। वे सब अखाड़े से भाग गए और अन्त में उसी मुर्गे को ही विजयी घोषित किया गया। अहिंसा लाने का यही सर्वोत्तम तरीका है। हिंसा के स्थान पर जाकर शांति से खड़े हो जाइए और वहाँ घटित होने वाली सभी चीजों को शांति से देखिए। साक्षी भाव कार्य करता है और वहाँ होने वाली हिंसा को रोक देता है।

साक्षी अवस्था मानसिक स्थिति नहीं है, यह आध्यात्मिक उत्थान की अवस्था है जिसमें आप साक्षी बन जाते हैं। साक्षी अवस्था में बने रहने का सर्वोत्तम तरीका ये है कि आप किसी की आलोचना न करें, आलोचना बिल्कुल न करें। मैंने देखा है कि लोग हर समय दूसरों की आलोचना करते रहते हैं। वे अपनी आलोचना नहीं कर पाते। इसलिए सदा अन्य लोगों की आलोचना में लगे रहते हैं। अपने दोष उन्हें दिखाई ही नही पड़ते। यह बात तो वे कह भी नहीं सकते कि उन्होंने अन्य लोगों की कितनी हानि की है। वे सोचते हैं कि लोगों की आलोचना करना उनका अधिकार है और इस आलोचना का वे आनन्द लेते हैं। साक्षी भाव से देखते हुए, स्वयं इसका निर्णय करें। आपका अधिकार मात्र इतना ही है। किसी अन्य व्यक्ति या चीज़ की आलोचना करना आपका अधिकार नहीं है। परन्तु **कुछ लोग सोचते हैं कि यदि आलोचना नहीं करेंगे तो चीज़ें ऐसे ही चलती रहेंगी, कभी सुधरेंगी नहीं। वास्तविकता ये नहीं है।** आपका चित्त अब प्रकाशित है। प्रकाशित चित्त से जब आप चीज़ों को देखेंगे तो सभी बुराइयों में सुधार होगा। परन्तु हमें तो हमेशा यही लगता है कि हम बहुत महान चीज़ हैं और हमें ये सब कार्य करने हैं। ऐसी स्थिति में आप स्वयं एक समस्या बन जाते हैं, क्योंकि आप क्या कर सकते हैं? **आप कुछ नहीं कर सकते मात्र देख सकते हैं। साक्षी भाव से चीज़ों को उनकी वास्तविक स्थिति में देखने भर से आपमें एक उच्च स्थिति विकसित हो जाती है।**

साक्षी अवस्था में रहने वाले ऐसे सब लोगों में बहुत दिलचस्प परिवर्तन होते हैं। उनकी स्मरण-शक्ति का ह्रास बहुत कम हो जाता है। क्योंकि जो भी चीज़ वो देखते हैं, उसकी तस्वीर, उनके मस्तिष्क में बन जाती है। वे आपको हर देखी हुई चीज़ का रंग और उसकी बारीकियां बता सकते हैं। उनकी स्मरण शक्ति का ह्रास नहीं होता। परन्तु व्यक्ति यदि हर चीज़ के प्रति प्रतिक्रिया करता रहे तो स्मरण शक्ति बहुत दुर्बल हो जाती है। प्रतिक्रिया करना लोगों की आदत हो जाती है। मैं ऐसे एक व्यक्ति को जानती हूँ। एक बार मैं उसके साथ कार में जा रही थी। वह हर विज्ञापन को, हर दुकान के नाम को पढ़ता, हर चीज़, हर व्यक्ति को देखता और मुझे उनके विषय में बताता। ये ऐसा है, ये वैसा है। मैं हैरान थी कि ये व्यक्ति इतना अधिक बोल रहा है, इसका क्या होगा? परिणामस्वरूप उनकी स्मरणशक्ति का अचानक ह्रास हो जाता है और वे अत्यन्त भुलक्कड़ हो जाते हैं। इस प्रकार के लोगों की इतनी ही हानि नहीं होती, सामूहिकता में आकर भी वे बहुत हानिकर हो सकते हैं क्योंकि इस प्रकार के

स्वभाव के कारण वे कोई कार्य नहीं कर सकते, परन्तु उन्हें कुछ न कुछ करना तो जरूर है। इसी के लिए वे सामूहिक हुए हैं। इस प्रकार के आचरण में जो लोग बहुत अधिक उतरे हैं, वे बहुत से लोगों को अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा करके उनकी बहुत हानि कर सकते हैं।

मैं, हिटलर का उदाहरण दूंगी। नौ वर्षों तक वह देखता रहा कि यहूदी लोग क्या गलतियाँ करते हैं। जर्मन के लोगों की गलतियाँ उसने नहीं देखी। उसने ये नहीं देखा कि जर्मन के लोग समाज की क्या हानि कर रहे हैं। उस समय का समाज भी बहुत ही पतित था क्योंकि समाज में सभी प्रकार के दुराचार थे। अब वह देख रहा था कि यहूदी ऐसे हैं, वे ये करते हैं, पैसा लेते हैं, सूद पर पैसा उधार देते हैं, इन सारी बातों से उसने अपना मस्तिष्क भर लिया। परिणामस्वरूप उसमें प्रतिक्रिया हुई कि किसी भी तरह से इन लोगों को जर्मनी से भगाना है। इससे भी आगे, उसने सोचा कि जर्मनी से जाकर भी ये लोग बहुत वैभवशाली बन जाएंगे, तो क्यों न इनका वध कर दिया जाए? हिटलर के कारनामों को आप फिल्मों में भी सहन नहीं कर पाएंगे। परन्तु उसने और उसके अनुयायियों ने, ये सब कार्य बिना किसी हिचकिचाहट के किया। मानो यह अत्यन्त आनन्ददायी हो, या ऐसा करना उनका कर्त्तव्य हो। हजारों यहूदियों को मारना उनका कर्त्तव्य किस प्रकार हो सकता था? यहूदियों ने उनकी क्या हानि की थी? और उन्हें तो सुधारा भी जा सकता था, तो इतनी हिंसा की क्या आवश्यकता थी? उन्होंने तो विश्व के पूरे यहूदियों को समाप्त करना चाहा। अपनी साक्षी अवस्था यदि आप खो दें, तो स्थिति अत्यन्त भयानक हो सकती है क्योंकि तब आप नकारात्मक सामूहिकता के हत्थे चढ़ सकते हैं। ये नकारात्मक सामूहिकता इतनी बुरी तरह से कार्य करती है कि विश्व भर के सभी झगड़ों और समस्याओं का ठेका ले लेती है।

तो सहजयोगी होने के नाते हमें क्या करना चाहिए। हमें बिल्कुल प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। कोई गलत चीज भी यदि आपको दिखाई दे तो ठीक है, आप इस पर ध्यान करें। कोई गलत कार्य होता हुआ यदि आप देखें तो इस पर चित्त दें। कोई आपके प्रति यदि क्रूर है, तो उस क्षण प्रतिक्रिया न करें। जब वह व्यक्ति शांत हो जाए, तब आप उसे बताएं, क्योंकि उस समय तो वह क्रोध से भड़क रहा था। ऐसी स्थिति में उसे बताने पर भी कुछ न होता। शनैः शनैः आप उन्हें, उनकी गलतियों का एहसास करवा पाएंगे और उनका हृदय जीत सकेंगे। जो कार्य वे कर रहे थे, वो करना अनुचित है। किसी भी चीज के प्रति प्रतिक्रिया करना मूर्खता है और आत्मघातक भी। कुछ लोगों में प्रतिक्रियाएं अन्तर्रचित हैं। आपने श्री क्लिंटन का व्यवहार देखा होगा। मेरा अभिप्राय है कि उस जैसे उच्च पदारुढ़ व्यक्ति में इस प्रकार की प्रतिक्रियाएं समझ नहीं आ सकतीं! सम्भवतः उसमें इनकी रचना बचपन से ही हो। अब वह कठिनाई में है, बहुत लज्जित है। प्रतिक्रियाओं का आनन्द लेने के कारण भी ऐसा हो सकता है। किसी भी स्त्री या पुरुष के प्रति क्यों आप प्रतिक्रिया करें? आज की संस्कृति की, विशेषकर विकसित देशों की, यह सबसे बड़ी समस्या है कि हर समय पुरुष स्त्रियों की ओर देखते हैं और महिलाएं पुरुषों की ओर। किसलिए? सम्भवतः वे महिलाओं की ओर ये जानने के लिए देखते हैं कि कितनी महिलाएं उनकी ओर देख रही हैं या महिलाएं पुरुषों की ओर ये जानने के लिए देखती हैं कि कितने पुरुष उन्हें देख रहे हैं। क्यों? ऐसा वहाँ इसलिए घटित हो रहा है क्योंकि वे हीन भावना के शिकार हैं या वे सब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि दूसरे लोगों की सहानुभूति पाने के लिए, उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए

आजकल सभी प्रकार के उल्टे सीधे कार्य किए जा रहे हैं। आपका चित्त यदि इनकी ओर जाएगा तो आप हैरान रह जाएंगे। अभी कोई बता रहा था कि अन्य लोगों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए एक महिला ने अपने आठ बच्चों की हत्या कर दी। इन भयानक कुकृत्यों की कल्पना आप करें। यदि आप चाहते हैं कि अन्य लोग प्रतिक्रिया करें, आपको देखें या अनावश्यक महत्व आपको दें तो आप ये सब करें। परन्तु इस खोखले महत्व का उपयोग क्या है? परन्तु आधुनिक जीवन में लोग इसी के पीछे घूम रहे हैं, यह आम बीमारी है। आप कैसे लगते हैं? आपको कैसा दिखाई पड़ना चाहिए? आपकी चाल कैसी होनी चाहिए? ये सब मूर्खता है और शक्ति की बरबादी।

परमात्मा ने मानव को एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न बनाया है। नि:सन्देह एक व्यक्ति की शक्ल दूसरे से नहीं मिलती। प्रकृति में भी पेड़ों के पत्ते इतने अद्वितीय होते हैं कि एक पेड़ का पत्ता, दूसरे पेड़ जैसा नहीं होता। मानव को भी इसी प्रकार अद्वितीय बनाया गया है। व्यक्ति को स्वीकार करना चाहिए कि जैसे भी आप हैं, ठीक हैं। आप दूसरे व्यक्ति सम क्यों लगना चाहते हैं? इस प्रकार की प्रतिक्रिया बिल्कुल मूर्खतापूर्ण है और इस पर हम अपनी शक्ति और जीवन को बर्बाद कर रहे हैं। सहजयोगी होने के नाते आपका मूल्य महान है। आप यहाँ लोगों को इन तुच्छ विचारों, कार्यों और आचरणों से मुक्त करने के लिए आए हैं। मैं नहीं जानती कि किसको दोष दिया जाए? परन्तु अचानक आपका चित्त अत्यन्त विचित्र हो गया है। हमारी प्रतिक्रियाएं अत्यन्त अटपटी हो गई हैं। समझ नहीं आता कि लोग इस प्रकार प्रतिक्रिया क्यों करते हैं तथा लोगों की प्रतिक्रियाओं पर क्यों ध्यान देते हैं? ये सारी चीजें व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं हैं, सामूहिकता के स्तर पर भी हैं। परिणामस्वरूप, आप देखते हैं, एक नई प्रकार की मूल्य प्रणाली की सृष्टि हो गई है। उदाहरण के रूप में, एक माँ भी इस बात की शेखी हाँकेगी कि उसके पीछे कितने पुरुष दौड़ रहे हैं या वह अपने आप को महान अभिनेत्री समझेगी! वे स्वयं को क्या समझती हैं? ये मेरी समझ में नहीं आता। जिस प्रकार वे अपने विषय में बातें करती हैं वह अत्यन्त आश्चर्यजनक है। महिला यदि माँ है तो उसे एक अच्छी माँ होना चाहिए और माँ की तरह से ही दिखाई पड़ना चाहिए। परन्तु उनके मस्तिष्क में तो केवल एक ही बात भरी हुई है कि उन्हें अत्यन्त आकर्षक होना चाहिए या महारानियों की तरह से लगना चाहिए। समझ नहीं आता कि वे कौन सा पद प्राप्त करना चाहती हैं! पुरुषों का भी यही हाल है। पुरुषों को देखना चाहिए कि उनके अन्दर कोई गुण है, कोई ऐसा गुण जो उन्हें महान पुरुष बना सके? ऐसा गुण यदि होगा तो दिखाई पड़ जाएगा। इसका विज्ञापन आपको नहीं करना पड़ेगा, इसको बढ़ा-चढ़ा कर दर्शाना नहीं होगा। यह अपने आप प्रकट हो जाएगा। लोगों की राय के विषय में यदि आपको, इतनी उदासीनता हो तो, मैं सोचती हूँ, आपने बहुत कुछ प्राप्त कर लिया है। आपकी बहुत सी निराशा समाप्त हो जाएगी।

सहजयोग में भी मैंने देखा है कि लोग बहुत दिखावा करना चाहते हैं। मैं जानती हूँ कौन ऐसा करता है, उन्हें जान लेना चाहिए। **एक बार जब आप बाह्य चीज़ों के प्रति प्रतिक्रिया करना बन्द कर देंगे तो आप के अन्तस में प्रतिक्रिया होगी और इससे अन्तर्दर्शन आरम्भ हो जाएगा।** जब आप स्वयं को देखेंगे तो आप हैरान हो जाएंगे कि आप कितने प्रशंसनीय हैं! आप कितने प्रसन्न हैं! इससे भी थोड़ा सा आगे यदि आप जाएं तो आप इन दोनों चीज़ों के बारे में सोचना बन्द कर देते हैं। मात्र निर्विचार होकर सम्माननीय व्यक्ति की तरह से आप खड़े होते हैं। जिसकी **संगति** सभी लोग चाहते हैं। जिसे

सब प्रेम करते हैं और सब जिसकी चिन्ता करते हैं। अतः व्यक्ति को ये चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि लोगों की प्रतिक्रिया क्या है? वे उसके विषय में क्या सोचते हैं और क्या कहते हैं? अन्तर्दर्शन द्वारा आपको स्वयं ये सब देखना चाहिए। कुछ समय पश्चात् आपको अन्तर्दर्शन की भी आवश्यकता न रहेगी। मैं उस स्थिति की बात कर रही हूँ, जिसमें श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि मैं स्वयं युद्ध नहीं करूंगा। तुम्हें मेरे और मेरी सेना में से एक को चुनना होगा। तो कौरवों ने कहा, हम आपकी सेना लेंगे, आपकी सेना से हम अपनी सेना को शक्तिशाली बनाएंगे। परन्तु अर्जुन ने कहा कि मुझे सेना नहीं चाहिए, मैं तो आपको चाहता हूँ। आप युद्ध नहीं करना चाहते तो न करें। यद्यपि वे युद्ध नहीं करेंगे, परन्तु साक्षी अवस्था में वहाँ उपस्थित होंगे और उनकी शक्ति सारा कार्य करेगी। उन्हें युद्ध करने की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उनकी शक्ति जो बाह्य रूप से मौन है कार्य करेगी और इस प्रकार वे युद्ध में विजय प्राप्त करेंगे।

अतः साक्षित्व की ये शक्ति आपको अपने अन्दर विकसित करनी चाहिए। इसे विकसित करने का प्रयत्न करें। **किसी चीज़ के प्रति जब आप प्रतिक्रिया करने लगें तो प्रतिक्रिया को रोक दें, सभी प्रकार की प्रतिक्रिया समाप्त कर दें। तब, आप हैरान होंगे, आप स्वयं को बहुत शक्तिशाली पाएंगे, क्योंकि आपमें न तो आकांक्षाएं होंगी, न इच्छाएं और न ही कोई विशेष लगाव। कुछ भी नहीं, साक्षी रूप से आप नाटक देख रहे होंगे। साक्षी रूप से देखना भी अत्यन्त दिलचस्प है। तब आप हर चीज़ के पीछे छिपे विनोद एवं मूर्खता को देख सकेंगे। आप समझ सकेंगे कि लोग किस प्रकार उग्र हैं और उन पर हँसेंगे। बिना परेशान हुए, बिना उत्तेजित हुए इस नाटक पर हँसेंगे। कुछ समय पश्चात् आपकी साक्षी अवस्था उन्नत हो जाएगी और सामूहिक रूप से जब आप सब साक्षी अवस्था में होंगे तो बिना कुछ किए, बिना कुछ कहे, बिना गतिशील हुए आप अद्वितीय कार्य कर पाएंगे। आपकी** mifLFkfr ekk 1sdk;Z gksA मैं ये नहीं कहती कि इसका प्रभाव सभी लोगों पर होगा; नहीं, ऐसा नहीं कह सकते, परन्तु अधिकतर लोग आपसे प्रभावित होंगे। इस अवस्था में रहने वाला व्यक्ति, अन्य लोगों को शांति एवं आनन्द प्रदान करता है।

मैं आपको एक सहजयोगी की कहानी सुनाऊंगी जो एक टापू पर रहता था। वो सहजयोग के कार्य के लिए दूसरे टापू पर जा रहा था। नाव में जब वह बैठा तो उसने देखा कि घने काले बादल बने हुए हैं और गरज रहे हैं। उसने साक्षी भाव से उनकी ओर देखा और कहा,"मेरे वापिस आने तक प्रतीक्षा करो। मैं श्री माताजी का कार्य करने जा रहा हूँ।" वह दूसरे टापू पर गया, सहज कार्यक्रम किया, सभी कुछ समापन करने के पश्चात् वह वापिस आ गया। जब वह अपने घर में सोने लगा तो गड़गड़ाहट के साथ मूसलाधार वर्षा होने लगी। **प्रकृति भी समझती है कि आप साक्षित्व की महान अवस्था में हैं।** परन्तु मैंने देखा है कि लोग महत्वाकांक्षी हैं। सहजयोग में भी लोग महत्वाकांक्षी हैं। वे अगुआ बनना चाहते हैं, और न जाने क्या-क्या। ये सब आकांक्षाएं मिथ्या हैं। सारी मिथ्या चीजें प्राप्त कर के लोग उनमें उलझे रहना चाहते हैं। **एक बार जब आप साक्षी भाव से देखना सीख लेंगे, तो इनकी सारहीनता को जान जाएंगे, अर्थहीनता को जान जाएंगे और माया को समझ जाएंगे। अतः साक्षी अवस्था ही स्वत्व (Personality) की समस्या का समाधान करने का सर्वोत्तम उपाय है। साक्षी अवस्था में हर चीज़ को देखने का अभ्यास करें।** कोई भी टिप्पणी करने से पहले साक्षी अवस्था का अभ्यास करें।

यह अत्यन्त संतोषप्रदायक दृष्टिकोण है।

श्रीकृष्ण की साक्षी अवस्था ही उनके जीवन की महानतम शक्ति थी। बिना कुछ किए, बिना हाथों में तलवार उठाए, बिना युद्ध की बातचीत किए, उन्होंने युद्ध जीतने में पांडवों की सहायता की। केवल इतना ही नहीं, अपनी गीता के माध्यम से उन्होंने हमें ये बताने का प्रयत्न किया कि आसुरी शक्तियों पर विजय किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है। पूरी गीता में उन्होंने साक्षी अवस्था का ही वर्णन किया है। इस नज़रिए से अब यदि आप गीता को पढ़ें तो ये देखकर हैरान होंगे कि साक्षी-भाव में सर्वत्र उन्होंने हर चीज़ का वर्णन किया है तथा किस प्रकार इस साक्षी अवस्था ने मनुष्यों को समझने में उनकी सहायता की। श्रीकृष्ण बहुत अधिक व्यवहारिक व्यक्ति न थे। उन्होंने सबसे पहले ये बताया कि स्थितप्रज्ञ किस प्रकार बनें। **साक्षी अवस्था में रहने वाला व्यक्ति ही स्थितप्रज्ञ होता है।** स्थितप्रज्ञ, स्थिति पर लिखे गए श्लोकों को यदि आप देखें तो स्थितप्रज्ञ व्यक्ति वही है जो साक्षी अवस्था में है। वह किस प्रकार रहता है, कितना प्रसन्न है, किस प्रकार से चीज़ों को देखता है। यह अत्यन्त दिलचस्प है। श्रीकृष्ण सर्वप्रथम इस अवस्था का वर्णन करते हैं, किसी दुकानदार की तरह से घटिया चीज़ से आरम्भ नहीं करते, सर्वप्रथम सर्वोत्तम बात करते हैं। तत्पश्चात् वे अन्य तीन पक्षों की बात करते हैं। **सर्वप्रथम वे कर्म के विषय में बताते हैं। बहुत से लोग कर्म में ही उलझ कर रह जाते हैं। वे कहते हैं कि जो भी कर्म हम कर रहे हैं इन्हीं से हमें पुण्य प्राप्त होंगे। परन्तु श्रीकृष्ण ने ऐसा नहीं कहा था।** उन्हें यदि आपने समझा है तो आप अवश्य जानते होंगे कि उनका अभिप्राय ये नहीं था। वे कहते हैं कि जो भी कर्म करने आवश्यक हों, उन्हें आप कीजिए परन्तु उनका परिणाम परमात्मा पर छोड़ दीजिए। परमेश्वरी शक्ति ही परिणाम देती है। **कुछ लोग सोचते हैं कि सुकृत्यों के कारण उन्हें धन प्राप्त हो गया है और उस धन से वे सभी प्रकार के बुरे कर्म करने लगते हैं।** उन्होंने ऐसा नहीं कहा था। श्रीकृष्ण ने कहा था कि परिणाम परमेश्वरी शक्ति पर छोड़ दो क्योंकि परमेश्वरी शक्ति ही जानती है कि आपके हित में क्या है। अतः यदि आप सोचते हैं कि आपने कोई अच्छा कार्य किया है, किसी की सेवा की है, गरीबों की सहायता की है, महिलाओं के लिए कुछ अच्छा कार्य किया है, तो इन सभी सुकृत्यों के परिणाम परमात्मा के चरण कमलों पर छोड़ दें। इसका अभिप्राय ये हुआ कि जो भी कुछ सुकृत्य आपने किए हैं उनके कारण अपने अन्दर अहं को न बढ़ने दें। **उन्होंने बहुत अच्छा लिखा है परन्तु कर्म के विषय में उन्हें समझने के लिए भी साक्षी अवस्था का होना आवश्यक है।** कर्म के बाद उन्होंने ज्ञान के विषय में लिखा है। ज्ञान का अर्थ है आपको समझ आ जाना, इसका अभिप्राय पुस्तकों का ज्ञान नहीं है। **ज्ञान का अर्थ है स्व को समझना।**

इसका अर्थ ये हुआ कि आपको सहजयोगी बनना होगा ताकि बहुत सी चीज़ों को चैतन्य लहरियों के माध्यम से समझ सकें। ज्ञान का अर्थ पुस्तकें पढ़ना नहीं है। पुस्तकें पढ़ने से तो आप और अधिक अहंकारी हो जाते हैं। **अतः ज्ञान का अर्थ है कि आप स्वः (आत्मा) को पहचानें। स्वः को आप यदि नहीं जानते तो आप कुछ नहीं जानते। अतः सार ये हुआ कि आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें और स्वः को पहचानें।** यह दूसरी बात है जो श्री कृष्ण ने कही है। अन्त में वे **भक्ति** की बात करते हैं। **भक्ति का अर्थ है श्रद्धा।** भक्ति का वर्णन करते हुए भी श्रीकृष्ण ने दूसरी युक्ति अपनाई। लोगों को गलियों में 'हरे-रामा, हरे कृष्णा' गाते हुए आप देखते हैं। उन्होंने भक्ति का एक शब्द में वर्णन कर दिया है-**'अनन्य भक्ति । अनन्य भक्ति जहाँ दूसरा कोई न**

हो यानि आपने स्वयं को परमेश्वर में विलीन कर दिया हो। जब आपकी एकाकारिता मुझसे हो तभी भक्ति करें अन्यथा मैं इसे स्वीकार नहीं करता। वो कहते हैं 'पत्रम् फलम् पुष्पम् तोयम्'। तुलसी दल, फल या पुष्प जो भी कुछ आप मुझे समर्पित करेंगे मैं उसे स्वीकार करूंगा। परन्तु वास्तविक भक्ति तभी संभव है। जब आप परमात्मा से एक तार हो जाते हैं। एक तार हुए बिना तो ये मात्र दिखावा है। तो श्री कृष्ण की बताई 'भक्ति' भी आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् ही हो सकती है। भक्ति का उन्होंने कोई मूल्य नहीं बताया। आपने भक्ति के लिए कितना धन दिया, ये बात महत्वहीन है। श्री राम इसके एक महान उदाहरण हैं। वे जंगलों में गए, वहाँ पर अछूत जाति की वृद्ध भीलनी थी। श्री राम जब उसके यहाँ गए तो उसने अपने दाँतों से चखे हुए बेर अत्यन्त प्रेमपूर्वक उन्हें अर्पण किए। कहने लगी ये सब बेर मैंने चखे हैं इनमें कोई भी खट्टा नहीं है। भारतीय संस्कृति के अनुसार चख कर झूठी की हुई चीज़ किसी को भेंट नहीं की जा सकती, परन्तु श्री राम ने इन बेरों को बड़े प्रेम से खाया, कहा कि, "वाह कितने अच्छे बेर हैं।" इतने अच्छे फल तो मैंने कभी भी नहीं खाए। श्री लक्ष्मण भीलनी पर नाराज़ हो गए कि उसने अपने झूठे बेर श्री राम को क्यों दिये हैं। श्री सीता जी भी वहाँ मौजूद थी। श्री राम से भीलनी के चखे हुए फल लेकर उन्होंने भी उन्हें बड़े प्रेम से खाया। तब उन बेरों का महत्व श्री लक्ष्मण की समझ में आया और बहुत प्रार्थना करके उन्होंने श्री सीताजी से कुछ फल लेकर खाए। इन फलों में श्री राम ने क्या देखा? **जंगल में रहने वाली उस वृद्ध भीलनी का प्रेम।** श्री राम के लिए प्रेम ही महत्वपूर्ण था। आप भी जब किसी को कुछ देना चाहते हैं उसमें आपका प्रेम ही निहित होता है। उपहार की वस्तु पर खर्च हुआ धन महत्वपूर्ण नहीं होता, कितने प्रेम पूर्वक आपने यह उपहार दिया यह बात स्पष्ट होनी चाहिए। श्रीकृष्ण के साथ भी ऐसा ही हुआ। वे कौरवों के नगर हस्तिनापुर गए और दुर्योधन ने उन्हें भोजन के लिए निमंत्रण दिया, परन्तु उन्होंने क्षमा माँगी और कहा कि मैं नहीं आ पाऊंगा। वे एक नौकरानी के पुत्र, विदुर, के घर गए क्योंकि विदुर आत्मसाक्षात्कारी पुरुष थे और वहाँ बना सर्वसाधारण खाना खाया। विदुर क्योंकि आत्मसाक्षात्कारी थे इसलिए श्रीकृष्ण को उनके साथ खाना खाने में आनन्द महसूस हुआ।

तो आपकी मूल्य प्रणाली (Value system) भी प्रेम पर आधारित होनी चाहिए। जहाँ से आपको प्रेम मिलता है, जो लोग आत्मसाक्षात्कारी हैं, उनसे आपके सम्बन्ध होने चाहिए। अहं के नशे में चूर सांसारिक लोगों से नहीं। सांसारिक लोग चाहे जितने महान हों परन्तु सहजयोगी होने के नाते आपको प्रेम को समझना है, महसूस करना है और उसका सम्मान करना है। परन्तु आपमें यदि साक्षी अवस्था नहीं है तो आप देखेंगे कि इस व्यक्ति के पास कितना धन है? इसके पास कितनी कारें हैं? इसने कैसे वस्त्र पहने हैं? यह सब बातें बनी रहेंगी। परन्तु साक्षी अवस्था में आप समझ जाएंगे कि इस व्यक्ति से मुझे चैतन्य लहरियां प्राप्त हो सकती हैं, आप समझ जाएंगे कि फ़लां व्यक्ति आध्यात्मिक है और आप ऐसे व्यक्ति के साथ जुड़ जाएंगे, बनावटी चीज़ों को छोड़कर सच्चे व्यक्ति के साथ जुड़ जाएंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें, धन्यवाद।

■ ■ ■

श्री गणेश पूजा (कबैला 5.9.1998)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम श्री गणेश की पूजा करेंगे। मैं सोचती हूँ कि मैंने आपको श्री गणेश और उनके स्वभाव के विषय में बहुत कुछ बताया है। परन्तु अब भी हममें से बहुत से लोग ये नहीं महसूस कर पाए कि उनकी शक्तियां क्या हैं और वे हमसे क्या अपेक्षा करते हैं? श्री गणेश का सम्मान करने के लिए पावित्र्य (Chastity) का महत्व समझ लेना प्रथम एवं मुख्य आवश्यकता है। पावित्र्य केवल महिलाओं के लिए ही नहीं है; पुरुषों के लिए भी पावित्र्य बनाए रखना बहुत आवश्यक है। आपमें यदि वास्तव में आत्मसम्मान है तो बिना किसी कठिनाई के आप पावित्र्य अपना लेंगे, अन्यथा तुच्छ एवं अपमान जनक चीज़ों के पीछे दौड़ते रहेंगे। पावित्र्य का सम्मान, इसकी समझ और इसे आत्मसात करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पावित्र्य की मर्यादा तोड़ने की आदत बचपन से ही विकसित होने लगती है, इस विषय में हमें बहुत सावधान रहना चाहिए। हम यदि गणेश अवस्था में हैं तो इस प्रकार की गन्दी चीज़ें हमें नहीं अपनानी चाहिए। मैं नहीं समझ पाती कि लोगों को ऐसे विचार कहाँ से मिलते हैं? आप देखते हैं कि विश्व में चारित्र्य का घोर संकट है। विशेष कर पश्चिमी देशों में, हमें बाल-यौन-शोषण के बहुत से मामले सुनने को मिलते हैं। परमात्मा के मन्दिर में व्यक्ति को इस गन्दी बीमारी का नाम भी नहीं लेना चाहिए जिसने लोगों को अपने चंगुल में फंसा लिया है। भारत में हमें ऐसी चीज़ें सुनने को भी नहीं मिलती, इनके विषय में हम नहीं जानते। निःसन्देह कुछ लोग अत्यन्त अधम हैं और जब तक उन्हें जेल की सलाखों के पीछे न डाल दिया जाए, उनकी समझ में नहीं आता। परन्तु सहजयोगी के लिए आवश्यक है कि अपने चरित्र की देखभाल करें। मैंने जैसा कल आपको बताया था, अपने लिए लड़की या लड़का ख़ोजना आवश्यक नहीं है। यह भी चारित्र्य की मर्यादाओं के विरुद्ध है। मैं नहीं कहती कि आप केवल अपने माता-पिता को ही इसका निर्णय करने दें, सहजयोग को यह कार्य करने दें, क्योंकि आप सहजयोगी हैं, गणेश के रूप में जन्मे हैं और गणेश अन्ततः ईसा बन जाते हैं।

अतः चारित्र्य के प्रति आपका दृष्टिकोण अत्यन्त महत्वपूर्ण है। चारित्र्य के मामले में ही यदि हम भटक जाते हैं तो सहजयोग अत्यन्त दुष्कर है। यह आपको वांछित आशीर्वाद नहीं देता। आपने देखा कि रुमानिया और यूक्रेन के लोग कितना सुन्दर गा रहे थे! इसका एक कारण ये है कि मूलतः वे विनम्र लोग हैं, इतने विनम्र हो गए हैं कि उन्होंने यौन-जीवन जैसे तुच्छ विचारों को त्याग दिया है। विनम्रता मनुष्य को सिखाती है कि उसमें आत्मसम्मान का अभाव है। इस्लाम धर्म में सतीत्व के महत्व पर इतना बल दिया गया कि मोहम्मद साहब उस सीमा तक गए जहाँ उन्होंने कहा कि आप चार-पाँच महिलाओं से विवाह कर सकते हैं ताकि समाज में वेश्याएं न हों। एक बार जब सतीत्व हमें छोड़ने लगता है तो हमें किसी भी चीज़ की चिन्ता नहीं रहती। उच्च पदासीन लोगों में हमने इसके परिणाम देखे हैं। ये लोग स्वयं को बहुत महान मानते हैं और सोचते हैं कि ईसा मसीह

की मर्यादाएं तोड़कर वे जो चाहे कर सकते हैं; अपनी सहायक महिलाओं के साथ जैसा चाहे दुर्व्यवहार कर सकते हैं। चाहे वे ये कुकृत्य गुप्त रूप से करें परन्तु श्री गणेश सब देखते हैं और उन्हें दण्डित करते हैं। इस प्रकार के जोखिम से भरे गन्दे कार्यों का सहजयोग में स्थान नहीं है। सहजयोगी सर्वप्रथम अपनी दृष्टि को सुस्थिर करते हैं क्योंकि दृष्टि का सम्बन्ध ईसामसीह की शक्ति से है। परन्तु सभी इसाई राष्ट्रों में मैंने देखा है कि लोगों की दृष्टि अस्थिर है। अत्यन्त हैरानी की बात है! जब ईसा मसीह उनके इष्ट हैं, ईसा मसीह की वो पूजा करते हैं, चर्च जाते हैं, ईसा मसीह का स्तुति गान करते हैं, फिर भी उनकी दृष्टि अस्थिर एवं अपवित्र है। यह कुदृष्टि ईसा मसीह के पावित्र्य को नहीं दर्शा सकती।

अब दूसरी बात ये है कि श्री गणेश की शक्ति की अभिव्यक्ति केवल तभी होती है जब आप विवेकशील हों, क्योंकि श्री गणेश ही विवेक प्रदायक हैं। परन्तु बहुत बड़ी समस्या ये है कि लोग नहीं समझते कि विवेक क्या है? तथाकथित बुद्धि, विवेक नहीं है। यह आपको अत्यन्त चालाक, आक्रामक और कभी-कभी इतना सूक्ष्म बना सकती है कि आप असत्य एवं उल्टे-सीधे कार्यों द्वारा लोगों को धोखा देते रहें और स्वयं को बहुत सफल समझें। सफलता सहजयोगी का मापदण्ड नहीं है। सहजयोग में सफलता का अर्थ है सूक्ष्म रूप से स्वयं को सहजयोग के प्रति समर्पित करना। यह स्थिति तब तक नहीं पाई जा सकती जब तक आप नियमित रूप से ध्यान धारणा नहीं करते। ध्यान धारणा करना अत्यन्त आवश्यक है। जो लोग ध्यान धारणा नहीं करते, सहजयोग का प्रभाव उन पर समाप्त हो जाता है क्योंकि आन्तरिक प्रेरणा श्री गणेश की शक्ति की अभिव्यक्ति से ही प्राप्त की जा सकती है। वे ही विवेक प्रदायक हैं। विवेक द्वारा ही आप समाधान ढूंढते हैं-ऐसे समाधान जो शांति, संतोष एवं सुखमय हो।

आपकी गलतियों के लिए श्री गणेश आपकी भर्त्सना भी करते हैं। कल ही मुझे बताया गया कि चक्रवात आया और उसके कारण कई लोगों को कष्ट उठाना पड़ा । चक्रवात से उनके तम्बू उड़ गए। इस मौसम में तम्बुओं की कोई आवश्यकता नहीं है। क्या आवश्यकता है? मेरी समझ में नहीं आता, परन्तु ये लोग तम्बू के बिना नहीं रह सकते। मैं बाहर गली में आराम से सो सकती हूँ। अतः व्यर्थ का झमेला बनाने की, इन सारी चीजों की, पूरी गृहस्थी का सामान लाने की कोई आवश्यकता नहीं है। **असुविधा से हमें घबराना नहीं चाहिए। आप यदि आराम पसन्द हैं, असुविधाओं को सहन नहीं कर सकते तो सहजयोग के लिए बेकार है।** प्राचीन काल में लोग हिमालय पर जाकर एक टाँग पर खड़े होकर तपस्या करते थे, फिर भी उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं होता था। वे आत्मसाक्षात्कार न प्राप्त कर सकते थे। परन्तु आप सब को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है। व्यक्ति को चाहिए कि वह स्वयं को सुख-सुविधाओं का दास न बनाए। आराम की बहुत अधिक चिन्ता करना अनावश्यक है। मैं सुख-सुविधाओं में भी रह सकती हूँ और इस उम्र में भी कहीं भी रह सकती हूँ। आपको त्याग का दिखावा नहीं करना, त्यागी बनना है। सन्यास अपनाने का अर्थ है कष्ट उठाना। परन्तु यदि आप अन्दर से सन्यासी हैं तो छोटी-छोटी कमियों का आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु अब भी हमारी शैली बाह्य संसार निर्धारित करता है। यदि हमारा अपना संसार हमें प्राप्त नहीं हुआ और फ़ैशन के अनुसार यदि हम चल रहे हैं तो विवेक लुप्त हो जाता है। मैं कभी किसी से

फैशन त्यागने के लिए नहीं कहती।

आपका विवेक ही, आपका मार्गदर्शन करेगा। विवेक, आपको मर्यादा सिखाएगा क्योंकि यहाँ आप उत्थान प्राप्त करने के लिए, आध्यात्मिकता के साम्राज्य में एक विशेष पद प्राप्त करने के लिए आए हैं। मैं पुनः विवेक शक्ति पर बल दूंगी। कोई कार्य करने से पहले आपको चाहिए कि विवेकपूर्वक यह देखें कि ऐसा करना क्या विवेकपूर्ण है? इस अभ्यास से आपका क्रोध, कामुकता, दोषभाव बहुत ही कम हो जाएंगे। एक बार जब आप जान जाएंगे कि स्वयं को दोषी मानना विवेक हीनता है तो यह भावना समाप्त हो जाएगी। एक अन्य सबसे बड़ा दुर्गुण, जो हममें है, वह है सभी सांसारिक चीज़ें पा लेने की इच्छा, सभी प्रकार के लालच में फंसे रहना। विवेक से जब आप समझ जाएंगे कि यह अनावश्यक है तो तुरन्त आपका लोभ शून्य हो जाएगा अन्यथा हर समय आप अपने-अपने स्वास्थ्य, अपने बच्चों, अपने घर या हर उस चीज़ के बारे में जो आपकी है, सोचते रहेंगे। परन्तु मृत्यु ये साबित करती है कि आपका कुछ भी नहीं। आप अकेले आए थे और अकेले जाएंगे। यह विवेक आत्मसात किया जाना चाहिए। आप इसका न तो अभ्यास कर सकते हैं और न ही इसे स्वयं पर थोप सकते हैं। यह तो आध्यात्मिकता के माध्यम से ही आत्मसात किया जा सकता है। तब महानतम आनन्द बहने लगेगा-श्री गणेश के नृत्य का आनन्द। बाल सम नृत्य करते हुए आप उन्हें देखें! उन्हें कितना आनन्द आता है! आपको भी वही आनन्द आता है। वैसे ही, मानो आपके अन्दर एक शिशु ने जन्म लिया हो और आप उस नन्हें शिशु-सम व्यवहार करने लगें। प्रायः इसमें कामुकता, लोभ आदि का कोई भाव नहीं होता। बच्चा जानता है कि बाँटकर किस तरह से खाना है। तो यही स्थिति है, आपको वे गण बनना है, श्री गणेश की सेना। वे गण हैं, अत्यंत शक्तिशाली हैं तथा विश्व का सारा कार्य करते हैं। वे इसी विश्व में रहते हैं परन्तु उनकी शक्ति का स्रोत परमात्मा है।

श्री गणेश ही ओंकार हैं। देवी ने सर्वप्रथम उनकी सृष्टि की क्योंकि वे ही मंगलमय हैं। तो हमारे हित के लिए सर्वप्रथम मंगलमयता का सृजन किया गया। श्री गणेश के कारण ही हम मंगलमय हैं। कुछ लोग घर में समस्याएँ खड़ी करते हैं, बिना बात के वे समस्याएं बनाते हैं। ऐसे लोग मंगलमय नहीं हैं। शान्ति एवं प्रेम बनाने वाले लोगों को ही श्री गणेश आशीर्वादित करते हैं। झगड़ने में क्या विवेक है? पता लगाएं कि लड़ाई में क्या विवेक है? हम क्यों झगड़ रहे हैं? किन चीज़ों के लिए? छोटी-छोटी चीज़ों के लिए! ऐसी चीज़ों के लिए जिन्हें आप स्वयं सुधार सकते हैं! क्यों आप झगड़ा करें? आप यदि झगड़ालू स्वभाव के हैं तो इसका अर्थ है कि श्री गणेश आपके विरुद्ध हैं। आपके गणेश आपके विरूद्ध हैं; आपके गणेश सुप्त हैं, वह शक्ति आपके साथ नहीं है। इस प्रकार के व्यवहार में विवेकशीलता नहीं होती। इस विश्व में जिन महान लोगों का सदियों से सम्मान हो रहा है वे अत्यन्त विवेकशील थे। वे क्रोधी स्वभाव के झगड़ालू या कामुक प्रवृत्ति के न थे। ऐसे लोगों को आने वाली पीढ़ियां कभी याद न करेंगी। परन्तु यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है, सहजयोगियों के रूप में आप लोग महत्वपूर्ण हैं।

पूरी मानवता को मुक्त करने के लिए आप इस पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं। अतः आध्यात्मिकता की गहनता में उतरना आपके जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। आध्यात्मिकता की गहनता में उतरने के इस लक्ष्य को, मैं सोचती हूँ, आप सब जानते हैं फिर भी इसे आप कार्यान्वित नहीं करते। पिछली बार मैंने आपको

बताया था कि आपका चित्त अन्दर होना चाहिए बाहर नहीं। और आपको प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। ये सब विधियां आपको विवेक एवं संवेदनशील होने में सहायता करती हैं। परन्तु जो व्यक्ति अपनी सुख-सुविधाओं, धन-संपत्ति, स्वास्थ्य तथा अन्य सभी प्रकार की चीज़ों के विषय में संवेदनशील हैं, वह विवेकशील नहीं है। वह बुद्धिमान नहीं है। भली-भांति पाले पोसे गए किसी शिशु को यदि आप देखें तो वह निश्चित रूप से अन्य लोगों की चिन्ता करेगा, खोज निकालेगा कि उन्हें किस चीज़ की आवश्यकता है, कैसे उनको खुश किया जा सकता है। उन्हें प्रसन्न करने के लिए वह छोटी-छोटी विधियां अपनाएंगा। परन्तु उनकी प्रतिष्ठा प्राप्त करना या उदारता का दिखावा करना उसका लक्ष्य नहीं होगा। सामूहिकता उसे सच्चा आनन्द प्रदान करती है।

आज मैं आपको श्री गणेश के प्रयासों या उनकी शक्तियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सामूहिक स्वभाव के बारे में कुछ और बताऊंगी। किसी ने मुझे बताया था कि आइंस्टाइन ने भी एक ऐसा ही सिद्धांत बनाया था। यह एक आविष्कार है कि यदि आप सब, श्री गणेश के आर्शीवाद से, शीतल हो जाएं तो हम सब एक हो जाएंगे, यह उनका सिद्धांत है। परन्तु फ़िलवर्ल्ड (Philworld) ने एक सिद्धांत स्थापित किया कि हेलियम (Helium) गैस को यदि आप ठंडा कर लें तो इसके सभी अणु या परमाणु सामूहिक रूप से चलने लगते हैं, अन्यथा ये परमाणु एक दूसरे से टकराते हैं, एक-दूसरे को पीटते हैं और बेतरतीब इधर-उधर दौड़ते हैं। इसी प्रकार जब वास्तव में हमें श्री गणेश का आर्शीवाद प्राप्त हो जाता है तो हमारे विवेक के साथ क्या घटित होता है? हम अत्यन्त विकसित सहजयोगी बन जाते हैं। विकसित सहजयोगी का अर्थ है कि वे एक हो गए हैं। 'एक' का क्या अर्थ है? एक का अभिप्राय है कि वे सब एक-दूसरे के लिए जीवित हैं। एक-दूसरे का हम आनन्द लेते हैं; एक-दूसरे की सुख-सुविधा को देखते हैं? धनी, निर्धन, स्वस्थ, रोगी सभी एक हो जाते हैं। संस्कृत में इसे एकाकारिता कहते हैं। वे एक हो जाते हैं। यह एकाकारिता उत्सवों के समय दिखाई पड़ती है। जब यहाँ आकर आप हर समय एक-दूसरे की सहायता करने का प्रयत्न करते हैं। मैंने देखा है कि किसी को भी परस्पर सहायता करने में हिचक नहीं होती। परस्पर आनन्द लेते हुए मैंने लोगों को देखा है। वे किसी का भी हृदय नहीं दुखाना चाहते। इसके विपरीत वे सभी के लिए सहायक एवं विवेकशील होना चाहते हैं। मेरे चुने हुए आपके अधिकतर अगुआ गण बहुत ही विवेकशील हैं और समस्याओं तथा उपद्रवों से बचना चाहते हैं। अधिकतर अगुआ ऐसे ही हैं। आपमें से कोई यदि सहजयोग को हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है तो उन्हें इसकी जानकारी होती है। आप चाहें जापान में हों, अमेरिका में हों या अन्य कहीं, एकाकारिता प्राप्त करने के लिए आपको अपने अन्तस की गहनता में जाकर यह महसूस करना होगा कि आप सब एक हैं। आप सब एक ही तरह से सोचते हैं, एक ही लक्ष्य प्राप्ति में आप सहायक हैं और एक ही शैली अपनाने का आप प्रयत्न करते हैं। मैंने देखा है लोग जब पूजाओं पर आते हैं तो वे एक-दूसरे की संगति का कितना आनन्द लेते हैं और कितना एक-दूसरे की सहायता करने का प्रयत्न करते हैं। रुस या बलगेरिया का कोई व्यक्ति जब अपनी समस्याओं के विषय में मुझे लिखता है तो, मेरे बिना कहे, अमेरिका का कोई सहजयोगी पत्र लिखकर तुरन्त मुझे कहता है कि, "श्री माताजी रूस के अमुक व्यक्ति को, कृपा करके, क्या आप अमेरिका

भेजेंगी"? प्रायः ऐसा होता है। मैं उन्हें कुछ नहीं कहती, कुछ नहीं बताती और यदि मैं कह दूं, तो एकदम बहुत से लोग, बहुत से देश उस कार्य को करने के लिए उद्यत हो जाते हैं। 'श्री माताजी ये समस्या है, ठीक है। हम जाकर इस कार्य को कर देंगे। इस मामले में, एकाकारिता के मामले में, मैं कहूँगी, ऑस्ट्रिया के लोग बहुत ही संवेदनशल हैं। लोगों की सहायता करने, उन्हें आत्मसाक्षात्कार देने के लिए इतनी दूर चल कर वे येरुशलम गए। मैं भी येरुशलम जाना चाहती थी, परन्तु वहाँ पर युद्ध की स्थिति के कारण मैं वहाँ न जा पाई। येरुशलम के लोगों को मैंने कहीं अधिक सामूहिक पाया, वे लोग मिस्र से आए थे। मैंने कहा कि आप यहाँ क्यों आए हैं?", 'मिस्र के मुस्लिम लोगों से दोस्ती बनाने।' आप कल्पना करें, मैं हैरान थी कि किस प्रकार वे यहाँ आ पाए! "केवल मित्र बनाने के लिए! वे मुस्लिम हैं, अतः हम उनके साथ मित्रता बनाना चाहते हैं।"

अतः बिना किसी बाह्य उद्देश्य के, बिना किसी लाभ की इच्छा से मित्र बनाना आपकी एकाकारिता की निशानी है। केवल इतना ही नहीं कि आप अन्य सहजयोगियों से सन्तुष्ट हैं, अन्य लोगों को भी सहजयोग में लाना चाहते हैं। बहुत से लोगों ने ये कार्य किया है। यह अत्यन्त पोषक है। ज्यों-ज्यों आपमें प्रकाश आता है आपको अन्य प्रकाशवान लोग मिल जाते हैं। यह अत्यन्त आनन्ददायी है। एक व्यक्ति को भी जब आप आत्मसाक्षात्कार देते हैं तो आपको प्रसन्नता होती है। बहुत से लोग मुझे लिखते हैं, "श्री माताजी हमें बीस लोग मिल गए हैं; हमें तीस लोग मिल गए हैं।" और वे इस पर बहुत प्रसन्न हैं कि हमें इतने सहजयोगी मिल गए हैं! परन्तु ऐसा करते हुए यदि आपमें अहं विकसित हो गया तो आप श्री गणेश के विरुद्ध चले गए क्योंकि आप जानते हैं, कि ईसामसीह को अहं पसन्द नहीं है। अहंकारी लोग उन्हें पसन्द नहीं हैं। ईसा ही श्री गणेश हैं; तो ईसा मसीह को ऐसे लोग अच्छे नहीं लगते जो **अहंकारवश** अपनी संस्था बनाते हैं, और दूसरे लोगों पर रौब झाड़ते हैं। ऐसे लोग उन्हें पसन्द नहीं हैं, दोनों ईसा और श्रीगणेश, एक ही हैं। उनमें पूर्ण एकाकारिता है। उन्हीं की तरह से हमें भी एकाकारिता का ये विशेष गुण अपने में विकसित करना चाहिए। हम इन **तथाकथित** धर्मों के विषय में भूल जाते हैं। आप देखें कि वे किस प्रकार लड़ रहे हैं? सभी बाह्य धर्म परस्पर लड़ रहे हैं। वे बेईमान हैं। सभी प्रकार के गलत कार्य कर रहे हैं। इस बात को आप भली-भाँति जानते हैं। रोज़ अखबारों में आप इन गलत कार्यों के विषय में पढ़ते हैं। वे थोड़ा-बहुत सफल हो जाते हैं। परन्तु उनकी ये स्थिति अधिक समय तक नहीं चलती क्योंकि उनका पर्दाफाश हो जाएगा। अब भंडाफोड़ होने का समय है। जिस श्रद्धा के आधार पर वे कार्य कर रहे हैं वो समाप्त हो जाएगी। इन सबको लुप्त हो जाना होगा। किसी भी धर्म की उच्चता के विषय में यह झूठा विचार है। कोई भी धर्म दूसरे धर्म से उच्च किस प्रकार हो सकता है, और ऐसे धर्म से जिसका सृजन श्री गणेश की मंगलमयता से हुआ हो!

दूसरे धर्म-सम्प्रदाय से लड़ना या ये कहना कि हम उच्च प्रजाति के लोग हैं और ये नीची प्रजाति के, मंगलमय नहीं है। ये सब असत्य विचार समाप्त हो जाते हैं। ये शेष नहीं बचते क्योंकि इन विचारों ने समस्याओं को जन्म दिया है। जैसे अमेरिका में पहले श्याम वर्ण लोगों से घृणा की गई। अब वे श्वेत लोगों से घृणा कर रहे हैं। बहुत बड़ा तूफान चल रहा है। भारत में भी कुछ लोगों को अछूत कहा जाता था। उन्हें

कष्ट दिए जाते थे, सताया जाता था और उनके साथ न किए जाने वाले कुकृत्य किए जाते थे। शास्त्रों में ऐसा करने के लिए नहीं लिखा है। अब यही अछूत लोग, उच्च जाति के लोगों के विरूद्ध कार्यरत हैं उन्हें उनका स्थान दिखा रहे हैं। तो इस प्रकार के विचारों से झगड़े खड़े हो जाते हैं। श्री गणेश जब आपको विवेक प्रदान करते हैं तो आप जान जाते हैं कि एक मनुष्य दूसरे से उच्च नहीं होता। आप सबको परमात्मा ने बनाया है और परमात्मा की बनाई हर चीज सुन्दर एवं मंगलमय है। एक बार जब आप ये बात समझ जाते हैं तो ये एकाकारिता बाहर भी फैल जाती है। यह अन्य लोगों तक भी फैलती है। केवल सामाजिक सूझबूझ और सामाजिक उन्नति के कारण आप दूसरों के प्रति हितकर नहीं होते, नहीं। अपने अंदर से, अन्दर से आप इस कार्य को करते हैं।

सर्वप्रथम ये एकाकारिता परिवार में होनी चाहिए। यह बहुत महत्वपूर्ण है। हर समय अशांत परिवार ऐसे बच्चों को जन्म नहीं दे सकता जिनमें एकाकारिता कि स्थिति हो। अतः हर समय उन्हें बताएं कि परस्पर झगड़े नहीं। परिवार में भी वे हर समय झगड़ते रहते हैं। ऐसे लोग सहजयोगी नहीं हो सकते। इस प्रकार के झगड़े यदि हैं, तो बेहतर होगा कि परिवार से बाहर हो जाएं। यही कारण है कि हमने तलाक़ की आज्ञा दी है। अन्य स्त्रियों के पीछे भागने वाले या ग़लत कार्य करने वाले पुरुषों से हमने कह दिया है कि सहजयोग छोड़ दें। कारण ये है कि एक सड़ा हुआ सेब बहुत से सेबों को सड़ा सकता है। अतः ऐसे पुरुष एवं महिला को सहजयोग से बिल्कुल बाहर रखा जाना चाहिए ताकि पारिवारिक सम्बन्ध बेहतर हों। सहजयोग में यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है। आपके पारिवारिक सम्बन्ध एकदम पूर्ण होने चाहिएं। मैं नहीं समझ सकती कि यदि आप अपनी पत्नी की संगति का आनन्द नहीं ले सकते, तो विश्व में किस चीज़ का आनन्द लेंगे? पारिवारिक जीवन के आशीष का आनन्द यदि आप नहीं ले सकते तो किसी भी अन्य चीज़ का आनन्द आप नहीं ले सकते। पति-पत्नी का गहन सम्बन्ध केवल श्री गणेश की समस्या के कारण ही टूटता है। गणेश तत्व यदि ठीक होता तो पूर्ण एकाकारिता और पूर्ण सूझबूझ पति-पत्नी के बीच होती। **सम्बन्धों का बिगाड़ ये बताता है कि श्री गणेश तत्व में निश्चित रूप से कुछ खराबी है। अपना श्री गणेश तत्व ठीक करें, तब दूसरों की ओर देखें। श्री गणेश पर आपको निरन्तर ध्यान करना है। पृथ्वी पर बैठकर ध्यान करें।** जब हम पृथ्वी माँ से दूर भागते हैं, पृथ्वी को छूते नहीं, उसका सम्मान नहीं करते तो एक प्रकार से श्री गणेश का सम्मान नहीं करते। श्री गणेश की सृष्टि पृथ्वी तत्व से की गई। वे पृथ्वी माँ का संचालन करते हैं। वे **पंच तत्व** का नियंत्रण करते हैं। केवल इतना ही नहीं वे आपको भी नियंत्रित करते हैं। कल जो फिल्म इन्होंने दिखाई, वो मुझे अच्छी लगी। इसमें श्री गणेश को एक अन्य व्यक्ति के साथ घूमते हुए दिखाया गया। वे बता रहे थे कि ऐसा करो, वैसा मत करो। ये फिल्म बहुत सुन्दर है क्योंकि इसमें श्री गणेश सदैव यह बताने के लिए उपस्थित रहते हैं कि अमुक कार्य मत करो। **फिर भी यदि आप ये कार्य किए चले जाते हैं, तो आपको सभी प्रकार के भयानक रोग हो सकते हैं, आपकी मुखाकृति बिगड़ सकती है, और सभी प्रकार के पारिवारिक रोग आपको हो सकते हैं। आपको राष्ट्रीय समस्याएं भी हो सकती हैं।** तो ये समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है कि अपवित्र विचारों से बचना चाहिए। मेरी समझ में

नहीं आता कि लोगों के मन में किस प्रकार से छोटे-छोटे शिशुओं के प्रति इस प्रकार के विचार आते हैं! कोई दो साल का शिशु है कोई पांच साल का। किसी बच्चे को या उसके फोटो को भी जब आप देखते हैं तो उसे प्रेम करने का, उस बच्चे को चूमने का आपका मन करता है। बच्चों का सम्मान यदि आप नहीं करते तो श्री गणेश के मूल्य को किस प्रकार समझ सकते हैं? देखें बच्चे कितने मधुर हैं! कितनी मधुरता से वे व्यवहार करते हैं! वे मुझे समझते हैं आपको भी समझते हैं। छोटे-छोटे बच्चे, नवजात शिशु भी मुझे समझते हैं। प्रेम को समझने की भावना एक प्रकार से उनमें अन्तर्जात है। अहंवादी लोगों के लिए प्रेम को समझ पाना अत्यन्त कठिन होता है। वे तो केवल स्वयं को प्रेम करते हैं, किसी अन्य को नहीं। किसी अन्य को यदि वे प्रेम करते हैं तो केवल लालच, वासना या किसी अन्य कारण से। 'प्रेम के लिए प्रेम' तो तभी सम्भव है जब आपका श्री गणेश तत्व पूरी तरह से शुद्ध स्थिति में रखा गया हो।

हम इतनी दूर आ गए हैं, विश्व भर में हमारे बहुत से सहजयोगी हैं। निःसंदेह मैंने कठोर परिश्रम किया, परन्तु आप लोगों ने भी मुझे बहुत सहारा दिया। मैं आपकी धन्यवादी हूँ। पश्चिमी देशों में, जहाँ गणेश तत्व का कोई महत्व ही नहीं माना जाता, वहाँ आप लोगों का सहजयोग स्वीकार करना, सहजयोग को जीवन में अपनाना और आपका इतना अच्छा बन जाना दुष्कर कार्य था। सहजयोग में श्री गणेश और उनके गुणों की पूजा अपने अन्तस में करना बहुत महत्वपूर्ण है। यह अत्यन्त सुख-शांति एवं सुरक्षा प्रदायक शक्ति है। **आपका गणेश तत्व यदि ठीक है तो कोई भी आपको छू नहीं सकता, कोई भी आपको नष्ट नहीं कर सकता, कोई भी आपको अशांत नहीं कर सकता क्योंकि श्री गणेश ही शांति के दाता हैं। विश्व शांति इसलिए आलोड़ित (डांवाडोल) है कि हमने श्री गणेश की पूजा नहीं की।** मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो उच्च पदों पर नियुक्त हैं, सेना के अधिकारी हैं, इसके अधिकारी हैं परन्तु स्वयं पर उनका अधिकार नहीं है। उनके अन्दर श्री गणेश पूर्णतः नष्ट-भ्रष्ट हो चुके हैं। ऐसे सभी लोग राष्ट्र नेता हैं और लोग उनका अनुसरण करने का प्रयत्न करते हैं। चाहे वे कोई कार्य गुप्त रूप से ही क्यों न करें, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। लोग इनके विषय में जानते हैं क्योंकि आपमें मंगलमयता यदि कम हो रही है तो किसी न किसी तरह से पूरा विश्व इस बात को जान जाता है। इन सब का अब पर्दाफ़ाश हो जाएगा क्योंकि अब सत्ययुग आ गया है। सत्य युग में हमारे अन्दर सत्य का प्रकाश है। सत्य हमारी सभी बेवकूफियों को अनावृत कर सकता है।

सत्य श्री गणेश का ही गुण है। वे ही हमारे मस्तिष्क को सत्य प्रदान करते हैं। ये सत्य ईसामसीह के माध्यम से आता है। ईसामसीह ने बहुत कार्य किया, बहुत कुछ किया। परन्तु उनके अनुयायियों की स्थिति को देखिए। देखिए, कि वे किस तरह से व्यवहार कर रहे हैं। हमें कम से कम इतना तो दर्शाना चाहिए कि यदि हम श्री गणेश और ईसा मसीह के अनुयायी हैं, तो हमारा व्यक्तित्व भी उन्हीं की तरह से आध्यात्मिक है। आध्यात्मिक **जीवन आनन्द का दाता है। आध्यात्मिकता के अतिरिक्त आनन्द कहीं अन्यत्र नहीं प्राप्त किया जा सकता।** आपको कुछ संतोष, थोड़ा अहं मिल सकता है। आप स्वयं को महान चीज़ समझने लगते हैं। **परन्तु श्री गणेश की अभिव्यक्ति सभी चक्रों पर होने से ही आन्तरिक शांति और आनन्द प्राप्त हो सकता है। वे सभी**

चक्रों पर प्रकट होते हैं। आपके उन चक्रों की स्थिति जब ठीक होती है तब आपको आनन्द प्राप्त होता है और ये आनन्द श्री गणेश के माध्यम से ही प्राप्त होता है। आजकल लोग भयानक पुस्तकें तथा भयानक विषयों पर लिख रहे हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो श्री गणेश के विवेक तत्व एवं मंगलमयता के विषय में बहुत मधुर चीजें लिख रहे हैं। बहुत ही मधुरतापूर्वक मैंने देखा है कि उनके विषय में कुछ लोगों ने बहुत मधुर कहानियाँ लिखी है। ये केवल प्रेम कहानियाँ ही नहीं हैं। प्रेम कहानियों का सृजन कुछ सीमा तक ठीक है। अब इसके आगे भी कुछ होना चाहिए। और इसके आगे श्री गणेश तत्व है जो कि पूर्ण शान्ति, पूर्ण आनन्द एवं प्रेम की सूझ बूझ है। पावन प्रेम के आदान-प्रदान का मूल्य है। कोई भी व्यक्ति जो आपको पावन प्रेम करता है, उसे ठीक प्रकार से समझा जाना चाहिए। कल मुझे पता चला कि श्री गणेश थोड़े से नाराज़ हो गए हैं। मैं नहीं जानती क्यों? वे ऐसे नहीं थे। सम्भवत: हममें से कुछ लोग श्री गणेश के सिद्धान्तों का पालन नहीं करते, इन्हीं के कारण ये सब कष्ट हैं।

सच्चे हृदय एवं मन-मस्तिष्क से यदि आप श्री गणेश का आशीर्वाद माँगे तो वे सदा आशीर्वाद देने के लिए तैयार रहते हैं परन्तु यदि आप उनकी बात नहीं सुनते और किसी भी तरह से आप अपनी पावनता नष्ट करते हें तो वे आपको छोड़ेंगे नहीं। छोड़ने की बात उन्हें समझ नहीं आती। केवल ईसा मसीह के स्तर पर पहुँच कर ही वे क्षमा करने की बात सोचते हैं। परन्तु क्षमा का अर्थ ये भी नहीं कि सभी अपराध क्षमा हो जाते हैं। नहीं। यह तो एक प्रकार की नियंत्रक शक्ति है। ईसा मसीह ने कहा है कि आपको क्षमा कर दिया जाएगा। परन्तु एक सीमा के बाद श्री गणेश दण्ड देने का प्रयत्न करते हैं। क्षमा करने की एक सीमा है जिसके पश्चात् वे सोचते हैं कि अब ऐसे व्यक्ति को क्षमा करना उचित न होगा। तो क्षमा करना ईसा मसीह के लिए तो ठीक है परन्तु श्री गणेश पर्दाफ़ाश करते हैं और अपराधी को दण्ड देते हैं। अत: आपको समझना चाहिए कि ईसा मसीह बहुत महान हैं क्योंकि वे हमें क्षमा शक्ति प्रदान करते हैं और श्री गणेश अत्यन्त शक्तिशाली हैं क्योंकि वे हमारी इच्छा शक्ति को सीमित करते हैं। किसी को भी हम क्षमा कर दें या कहें कि क्षमा करना मुझे अच्छा लगेगा, परन्तु हम नहीं जानते कि श्री गणेश हमें ऐसा करने भी देंगे या नहीं। और उनकी बात को ईसा मसीह भी नहीं टालते। वे दोनों एक हैं। एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। अत: हम ईसा मसीह की क्षमा शक्ति पर बहुत अधिक निर्भर नहीं हो सकते क्योंकि सदैव श्री गणेश, आपने देखा होगा, हाथ में फ़र्सा लिए बैठे रहते हैं। वे मातृ शान्ति हैं, शीतलता हैं और आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् आपको शीतलता देते हैं। **शीतल चैतन्य लहरियाँ श्री गणेश की दी कृपा से प्राप्त होती हैं।** नि:सन्देह ये ब्रह्म चैतन्य है परन्तु श्री गणेश ही इनको प्रसारित करते हैं। **वे ही आपको शांत करते हैं और अत्यन्त सन्तुष्ट एवं शान्तिमय बनाते हैं। उस शान्ति में आप सब एक हो जाते हैं।** आप किसी भी देश में भी रहते हों, किसी भी देश पर आपको गर्व हो, उसकी कमियाँ आपको दिखाई देने लगती हैं और उन्हें सुधारने का प्रयत्न आप करने लगते हैं तथा आपमें परस्पर एकाकारिता स्थापित हो जाती है। बुराई से आपको नहीं जाना जाता। सतयुग की ये महान बात है कि यह बुराइयों को अनावृत करता है। आक्रामकता पूर्वक और किसी गलत चीज़ को आप आश्रय नहीं देते। आजकल ये अपराध जोर-शोर से किए जा रहे हैं परन्तु

आप इनको स्वीकार नहीं करते। एक बार जब आप इन गलतियों को स्वीकार करना बन्द कर देते हैं तो अन्य सच्चे लोगों से आपकी एकाकारिता हो जाती है। उनके विचार, सूझबूझ, आनन्द भी एक सम होते हैं और वे एक-दूसरे का आनन्द लेते हैं। उनमें परस्पर एकाकारिता हो जाती है और सहजयोग में ये एकाकारिता पूर्णत: स्थापित होनी चाहिए। कुछ लोग जो केवल पैसा बनाना चाहते हैं या बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठा करना चाहते हैं या इस प्रकार की कोई अधम चीज़ चाहते हैं वो अपने इरादों में सफल नहीं होते। सहजयोग में आकर अपने लिए पति या पत्नी खोजने वाले लोग समाप्त हो गए हैं। विनम्रता से ही ये आध्यात्मिकता रहती है और श्री गणेश के प्रयासों के द्वारा विनम्रता बताई जाती है। एक बार उनकी माँ गौरी ने उनसे कहा कि जो पृथ्वी की तीन परिक्रमाएं करेगा उसे मैं इनाम दूंगी। श्री गणेश ने सोचा कि मेरी माँ से अधिक कौन महान है? पृथ्वी तो उनसे महान नहीं हो सकती। छोटा सा मूषक श्री गणेश का वाहन है। ये वाहन दर्शाता है कि वे कितने विनम्र थे। चूहे पर वे किसी प्रकार का वज़न नहीं डालते थे। उनके भाई कार्तिकेय का वाहन उड़ने वाला मोर था। श्री गणेश जानते थे कि वे अपने भाई का मुकाबला नहीं कर सकते। उन्होंने अपनी माँ की तीन परिक्रमाएं कर ली और इनाम जीता। ये **कहानी दर्शाती है कि तेज गति सफलता का मार्ग नहीं है। आपको अपनी गति कम करनी होगी। इसके अतिरिक्त आपको समझना होगा कि क्या चीज़ महत्वपूर्णतम है;** वैसे ही जैसे श्री गणेश ने समझा कि आपकी माँ, माँ का सम्मान करना और उन्हें उच्चतम मानना, महानतम मानना ही सबसे अधिक आवश्यक है। इस प्रकार से हमारे अन्दर उनकी अभिव्यक्ति की गई है। ऐसा जब घटित हो जाएगा तो आपकी आध्यात्मिकता बढ़ेगी। मुझे आशा है कि आप इसे श्री गणेश की तरह से कार्यान्वित करेंगे और एकाकारिता स्थापित करेंगे अपने अगुआओं के तथा अन्य लोगों के विरूद्ध पत्र लिखने वाले लोग मुझे अच्छे नहीं लगते। ये अच्छी बात नहीं है। यदि आप क्षमाशील हैं तथा आपमें एकाकारिता है तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं। अधिक से अधिक लोगों को सहजयोग में लाने का प्रयत्न करें। किसी को अधम या बेकार कहकर अलग नहीं किया जा सकता। क्षमाशीलता से उन्हें लाने का प्रयास करें। आपके पावित्र्य एवं विवेक से चीज़ें बेहतर होंगी। तो ये बहिष्कारवृत्ति भी त्यागी जानी चाहिए, सम्भवत: यह असुरक्षा की भावना के कारण आती है। यदि गलत लोग आ जाएंगे तो श्री गणेश उन्हें बाहर भगा देंगे। अत: उनसे न तो घबराएं और न ही उनके कारण अशांत हों। सबके साथ एक हों और लोगों की देखभाल करते हुए, उनका संचालन करते हुए, उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करें। मुझे आशा है कि इसके पश्चात् अपने अन्दर श्री गणेश के गुणों को विकसित करने के लिए आप लोग ध्यान धारणा करेंगे और अपने अन्दर पावित्र्य, शांति और सुरक्षा की शक्ति को उन्नत करेंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री गणेश पूजा (कबैला 5.9.1998)

विवाह समारोह के पश्चात
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

यह अत्यन्त आनन्ददायी एवं शुभअवसर था। इसका हम सबने आनन्द लिया। सभी दूल्हे-दुल्हनें बहुत प्रसन्न नज़र आ रहे हैं। ये सब देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है और मैं हृदय से आपको आशीर्वाद देती हूँ। केवल इतना कहूंगी कि अपने विवाह को अत्यन्त प्रेममय एवं सफल बनाएं, यह बहुत आवश्यक है। उदाहरण के रूप में मैंने देखा कि एक देश से छः या सात लड़कियां थीं जिन्होंने दुर्व्यवहार किया और तलाक़ ले लिया। इस प्रकार के व्यवहार के कारण हमने उस देश पर रोक लगा दी है। क्योंकि हमें लगा कि इन महिलाओं ने एक के बाद एक इतने विवाह तोड़ दिए, ऐसा उनके खोखले अहं के कारण हुआ होगा। यह हमारा अनुभव है। कुछ अन्य देश भी हैं। जिनमें सहज विवाहों के कुछ बुरे उदाहरण हैं। तो मैंने कहा कि यदि आप विवाह नहीं करना चाहते तो मत करें। सहजयोग में आप स्वयं के लिए या पत्नी के लिए विवाह नहीं करते, सहजयोग के लिए विवाह कर रहे हैं। अतः जब आप झगड़ते हैं या इस प्रकार की मूर्खता करते हैं तो आप सहजयोग को हानि पहुँचाते हैं। आपको एक-दूसरे के प्रेम, भावनाओं और विवाहित जीवन का आनन्द लेना चाहिए। मैंने देखा है कि कुछ लोग इतने मूर्ख हैं कि वे इतना भी नहीं जानते कि वैवाहिक जीवन का आनन्द क्या है? आप यदि आनन्द नहीं लेना चाहते तो ठीक है। यह केक के समान है, यदि आप इसे नहीं खाना चाहते तो न खाएं । परन्तु पूर्ण उत्साह के साथ, दैवी नियमों के अनुसार कार्य करते हुए आप डटे रहें और विवेकपूर्ण कार्य करें। सहजयोग में अधिकतर विवाह अत्यन्त सफल होते हैं। उन दम्पतियों के आत्मसाक्षात्कारी अत्यन्त सुन्दर बच्चे हैं और उन्हें देखकर अन्य परिवार भी सहजयोग में आ रहे हैं। मुझे आपको बताना है कि पति को यह नहीं समझना चाहिए के विवाह करके पत्नी पर रौब्र जमाने का या उसके सिर पर बैठने का अधिकार प्राप्त हो गया है। निःसन्देह पश्चिमी देशों में लोग ऐसा नहीं करते परन्तु भारत में प्रायः ऐसा होता है। भारतीय पुरुष अत्यन्त उग्र होते हैं। इसके विपरीत पश्चिम की महिलाएं पुरुषों से कहीं अधिक आक्रामक हैं। ये बात मेरी समझ में नहीं आती। इस स्वभाव के कारण कई बार विवाह टूट जाते हैं। किसी पर भी रौब्र जमाने की कोई आवश्यकता नहीं। किसी को कष्ट देने की कोई आवश्यकता नहीं। विवाह को निभा पाना यदि असंभव है, आपका साथी यदि अशोध्य है, तो सहजयोग में हमने तलाक़ की आज्ञा दी है। परन्तु तलाक़ लज्जाजनक है। जीवन का आनन्द लेने के स्थान पर तलाक़ लेना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। अत्यन्त सुन्दर, रोमांचक मनोभावों के साथ अपने पति-पत्नियों का आनन्द लेने के लिए आप तैयार हो जाएं। पहले दिन से झगड़ना न शुरू कर दें। तलाक़ के चक्कर में यदि आपने झगड़ना है तो वास्तव में अपने ख़ानदान, अपने देश को बदनाम करवाते हैं और आपके देश से विवाह की इच्छुक अन्य लड़कियाँ भी सहजयोग में विवाह करने से वंचित ही रह जाती हैं। क्योंकि ऐसे देशों की लड़कियों का विवाह करना मुझे अच्छा नहीं लगता। अब एक प्रथा बन गई है कि हम देखते हैं कि पिछले छः, सात वर्षों में किसी देश में सहज विवाह किस प्रकार चल रहे हैं। तो यदि आप सहज विवाह के सौन्दर्य एवं मर्यादा को ताक़ पर रख देना

चाहते हैं तो बेहतर होगा कि आप विवाह करने का निर्णय ही न लें। आपका विवाह करना हमारा कर्त्तव्य नहीं है, अच्छी पत्नी य अच्छा पति प्राप्त करना आपकी आवश्यकता है। इस सब के बावजूद भी यदि आप इसे स्वीकार नहीं करना चाहते या ऐसा नहीं करना चाहते तो भी एक दम से तलाक के विषय में न सोचें। मैंने देखा है कि पश्चिमी देशों के लोग विवाह के समय ही तलाक के विषय में सोचने लगते हैं। ऐसा करना बहुत लज्जाजनक है और बहुत गलत। यह सहजजीवन को नहीं दर्शाता। आप यदि सच्चे सहजयोगी हैं तो अपने पति/पत्नी के साथ प्रेम पूर्वक जीवन निर्वाह करने की योग्यता आपमें होनी चाहिए। सहज विवाह आप पर श्री गणेश का आशीष है, वे आपके वैवाहिक जीवन की रक्षा करेंगे, आपकी सहायता करेंगे और आपको बुराइयों से बचाएंगे। मैं जानती हूँ कि सहजयोग में विवाह करना कितना बड़ा वरदान है, परन्तु कुछ मूर्ख पुरुष एवं महिलाएं अपने वैवाहिक जीवन का आनन्द नहीं लेना चाहते। ऐसी स्थिति में हम उन्हें तलाक़ की आज्ञा देंगे, परन्तु एक बार तलाक लेने के बाद, सहजयोग में पुनः विवाह करने की आज्ञा हम उन्हें नहीं देंगे। यह निश्चित है। जिस व्यक्ति ने एक बार तलाक ले लिया है । हम उसका विवाह नहीं करना चाहते। यदि किसी उचित कारण से तलाक हुआ है, तब तो ठीक है। परन्तु तलाक़ के लिए तलाक़ लेकर विशेष प्रकार के व्यवहार की आज्ञा हम नहीं देंगे। तो मैं ये बताना चाहूंगी कि सहजयोग में तलाक़ निषिद्ध है। परन्तु यदि आप लड़ना चाहते हैं, कष्ट देना चाहते हैं, अन्य लोगों के जीवन को बर्बाद करना चाहते हैं, तभी तलाक़ लिया जाता है। मैं आपसे अनुरोध करूंगी कि अपने पति पत्नी का आनन्द लें। एक देश के लोगों का दूसरे देश के लोगों से विवाह का आरम्भ हमने उनके आनन्द के लिए किया है। कल मैंने आपको बताया था कि स्वयं परस्पर विवाह न करें। इसके हम जिम्मेदार न होंगे। विवाहों का आयोजन हमें करने दें। आप स्वयं यदि ऐसा करेंगे तो बहुत सी बेकार की समस्याएं खड़ी हो जाएंगी। जैसी कि पश्चिमी समाज में है। यहाँ आकर वे लड़की छांटना चाहते हैं या अपने केन्द्र से लड़की निश्चित करके वे यहां आते हैं। इसका अभिप्राय ये हुआ कि केन्द्र में ध्यान करने के स्थान पर वे लड़के लड़कियाँ खोजते रहते हैं। इस प्रकार की बेवकूफी हम रोकना चाहते हैं। इसलिए यदि आप सहजयोग में विवाह करना चाहते हैं तो आपको अपना वर स्वयं नहीं खोजना, क्योंकि हम यह देखना चाहते हैं कि आपकी चैतन्य लहरियाँ कितनी मिलती हैं। हमारे यह सब करने के बावजूद भी विवाह टूट जाते हैं। परन्तु यह बात मैंने अवश्य देखी है कि स्वयं तय किए हुए विवाह तो टूट ही जाते हैं। ऐसे विवाह सर्वसाधारण विवाहों की तरह से होते हैं। तो सर्वोत्तम बात ये होगी कि स्वयं को वचन दें कि आप मूर्ख नहीं बनेंगे और अपने विवाहित जीवन को बर्बाद नहीं करेंगे। आपके हित के लिए मैं चिन्तित थी। अतः बहुत परिश्रम करके, बहुत जाँच कर, सूझबूझ से मैंने ये सब कार्य किया है। बिना बात के आप मुझे दुखी न करें। बारम्बार मेरी यही प्रार्थना है कि आप प्रसन्न चित्त हो जाएं। मैं बहुत प्रसन्न हूँ, हृदय से आपको आशीर्वाद देती हूँ। मुझे विश्वास है आपके विवाह कार्यान्वित होंगे। जल्दबाजी मत कीजिए। सबूरी रखिए। सर्वप्रथम हर चीज़ को सहजता से लिया जाना चाहिए। तब देखें कि कितने प्रेमपूर्वक आपके विवाह कार्यान्वित होते हैं!

परमात्मा आपको धन्य करें, धन्यवाद।

साक्षी अवस्था में रहना यदि आप सीख लें तो भय नहीं रह जाता। जब आप साक्षी नहीं होते तभी परेशान होते हैं, तभी उत्तेजित होते है। बुरे लोगों की संगति में भी आप पड़ सकते हैं। यदि आप साक्षी अवस्था में हैं तो यह अवस्था अपने आपमें ही एक शक्ति है जो अन्य लोगों की कठिनाइयों को दूर करने में भी आपकी सहायक होती है।.....साक्षी अवस्था मानसिक स्थिति नहीं है, यह आध्यात्मिक उत्थान की अवस्था है जिसमें आप साक्षी बन जाते है। साक्षी अवस्था में बने रहने का सर्वोत्तम तरीका ये है कि आप किसी की आलोचना न करें।.....एक बार जब आप बाह्य चीजों के प्रति प्रतिक्रिया बन्द कर देंगे तो आपके अन्तस में प्रतिक्रिया होगी और इससे अन्तर्दर्शन आरम्भ हो जाएगा।.....व्यक्ति को चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि लोगों की प्रतिक्रिया क्या है। वे उसके विषय में क्या सोचते हैं और क्या कहते हैं। अन्तर्दर्शन द्वारा आपको स्वयं ये सब देखना चाहिए। कुछ समय पश्चात् आपको अन्तर्दर्शन की भी आवश्यकता न रहेगी।.....जिस प्रकार साक्षी अवस्था में रणभूमि में उपस्थित श्रीकृष्ण को युद्ध करने की आवश्यकता न थी। साक्षी अवस्था में उनकी शक्ति ने सारा कार्य किया। उनकी शक्ति, जो बाह्य रूप से मौन थी, ने कार्य किया और उन्होंने युद्ध में विजय प्राप्त की।

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी)